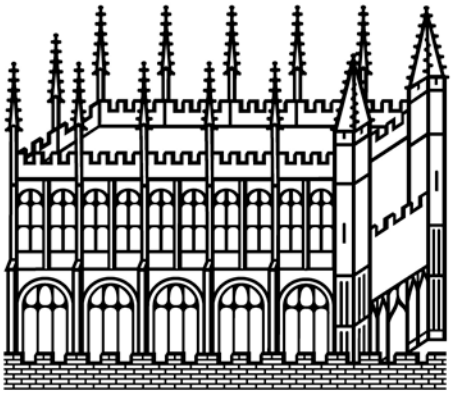


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi
Viranji 1

Hindi Viraji 1

13.D.72.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Saktivilāsa.

Sati Bilas Nagree

सतीविलास

सती بلاس

ज़िले जौनपुर गढ वाल ग्राम निवासि दुर्ग वंशोद्भव अमरसिंह

पत्नी कुंवरि विरच्ची कृत

जिसमें

सम्पूर्ण संसारी स्त्रियों के उपकारार्थ प्रमाणिक इतिहासों

सहित वेद शास्त्र मतानुसार स्त्रियों का परमतत्व ज्ञान

पति व्रत धर्म्म वर्णित है

स्थान लखनऊ

पहली वार

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छपा

अक्तूबर सन् १८८० ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् अक्तूबर सन् १८८० ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस सूची पत्र में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्योपार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें-

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भाषा पुराण इतिहास काव्य कोष	दोहावली रामायण	शुक बहत्तरी
	विनय पत्रिका	बकावली सुमन
महा भारत भाषा छन्द	सुरव सागर टैप	चहार दरवेश
प्रबन्ध	तथा उत्तम पत्थर के छा-	क़िस्सा हातम ताई
विनय मुक्तावली महा-	पे की	अपूर्व कथा
भारत का संक्षेप	विश्राम सागर	क़िस्सा गुल सनोबर
रामायण तुलसीकृत मू-	प्रेम सागर	इन्द्र सभा
तथा सटीक मानस दीपि-	ब्रज बिलास	सहस्र रजनी चरित्र
का कोष इत्यादि सहित	भक्त माल	दास्तान अमीर हमज़ा
तथा मोटे अक्षरों की मये	विक्रम बिलास	मनोहर कहानी
तसवीर	श्री राम व्याहोत्सव	अवतार कथा अमृत
रामायण कविता वली	बैताल पच्चीसी	कमीशन बड़ोदा
तथा गीता वली	सिंहासन बत्तीसी	सूर सागर
रामायण राम बिलास	पद्मावती खण्ड	कृष्ण सागर

श्रीगणेशाय नमः

सतीविलास

लिख्यते

॥ दोहा ॥ सबकर पालक जवन प्रभु अज अतीहनि-
र्वान ॥ वंदों तिनके पदकमलजापर अपर न आन ॥ १ ॥
गणपति प्रेम्य महेशा विधि चन्द सूर द्विज व्यास ॥
संत सती सारद शिवा शुजदहु मन की आस ॥ २ ॥ कवि-
त्त ॥ एक समय पिय के सुख हेत बयारि करों करविंजन
लीने ॥ नाहि समय प्रभु बोल उठे कछु मोहिं सुनावहु
ग्रंथ नवीने ॥ छन्द प्रबन्ध हमें नहिं मालुम नाते सकोच
महा मन कीने ॥ छोड़ि के सोच धस्यो पति ध्यान भये
कछु ज्ञान सती सत दीने ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ सोइ सत सती
विलास भाषि सुनायों कंत कहँ ॥ जो सुनिहै धरि मास
सो सुख पइहै जगत महँ ॥ ४ ॥ कवित्त ॥ पाप को नीर
बढ़ो अवगाह किहे मन चाहहु ए नर नारी ॥ पुरुष नाम
को भेद न जानत नारि भई कलि में व्यभिचारी ॥ मानु
पिता सुत बाम विरोध करै जड़ पाखंड सत्य बिसारी ॥ देखि
के सोच भये जबही तबही मम साहब दीन्ह उधारी ॥ ५ ॥
जीव बिना जस देह मलीन वो नीर बिना सरि सरवत वैसे ॥
ज्ञान बिहीन यती क्षिति में हरि भक्ति बिना नर रूप अनैसे ।

चन्द मलीन पियूष बिना ब्रह्मज्ञान बिना कुलब्राह्मण कैसे ॥ नारि बिरंजि बिचारि कहै पिय भक्ति बिना निया सोहत तैसे ॥६॥ तीरथ नेयम करै सब भांति उजागरि संतन साधु प्रवीनी ॥ लक्षण रूप सराहो कहां मुख पूरन चन्द कला जनु की नी ॥ लोक की रीति करै सब भांति भली कुल उत्तम बैसनवीनी ॥ नारि बिरंजि बिचारि कहै पिय भक्ति बिना सब भांति मलीनी ॥७॥ ॥रूपक घनाक्षरी॥ बिंब है अधर कुसुम रंग अंग है नेत्र मृग सावक भाव चरण में कमल गति ॥ केश हू भ्रमर चाल गति गयन्द आभा पूर्ण मुख चन्द बैन कोकिल सोहात अति ॥ नारंगी सी येड़ी उरोज श्री फल समान जोबन उमंग ते लजात नाहि देखि रति ॥ नाहू पर शृंगार अभरण अपार पट भारहू बिचार जाके ऊपर नदयाल पति ॥८॥ ॥सवैया॥ तीरथ व्रत सों नेह नहीं अरु जान्यो नहीं कछु देव पुजारी ॥ चाल कुचाल हमहिंन हिं मालुम यातें कहैं सब लोग गंवारी ॥ ज्ञान बिबेक कहा लहै नारि सदा जेहि निर्धिन संत बिचारी ॥ नाते बिरंजि बिचारि कहै मोहि देहु सिया पति कंत सो यारी ॥९॥ होय मलीन कुरूप भयावनि जाहि निहारि घिनात हैं लोग ॥ सोऊ भजै पति के पद पंकज जाय करै सति लोक में भोग ॥ नाहि सराहन हैं विधि प्रेय महेश्वर बरबाने बिसारि के योग ॥ यातें बिरंजि बिचारि कहै पति के पद की तिय किंकरि होऊ ॥१०॥ ॥दोहा॥ तिय जबही पियपद भजै भक्ति राम कैहोति ज्ञानभ अनुभव आपि सदा जगमगात जग ज्योति ॥११॥ ॥सोरठा॥ परकृत परपियदानि दुर्ग बंण में प्रगट भै ॥ जेहि सेवो सुख मानि अपर लालसा नाहिं मन

॥१२॥ दोहा॥ सूर्य्य बंप्रा मैं रघु भये रघु बंप्रा श्रीराम ॥
तासु तनय लवकुप्रा भये द्विरिवत पूरण काम ॥१३॥
द्विरिवत बंप्रा उद्दित भये दुर्ग बंप्रा महराज ॥ तिलक
युक्त सुभ सोभि जै सत्य धर्म कर साज ॥ आदि अ-
लरव ते अलिल मे तेहि ते भये निरंकार ॥ ताहि नि-
रंजनी सुत भयो तेहि ते ब्रह्म उदार ॥ सहस सीस को
बिधि भयो तेहि ते भे सत सीस ॥ अष्ट सीस ताके भ-
ये कमल नाभि प्रजनीस ॥ जो वरनौ यह भाँति से बाढ़ै
ग्रंथ अपार ॥ ताही ते कछु स्वल्प करि कहब बंप्रा बि-
स्तार ॥ आदि अलरव अरु सूर्य्य ते पुत्र इग्यारह जान ॥
पुत्र अठावन फिर गये भे रघु परम सुजान ॥ आठ पुत्र
रघुवंप्रागे तब जन्मे दृगसेन ॥ रामचंद्र जू को छन तिहि
रिवत बंप्रा निसेन ॥ प्रथम सेन पदद्वित गये युग सत
पुत्र प्रमान ॥ पाछे साढ़े तीन से पाल सु पदवी जान ॥
साहिदेव औ सीह पद पुत्र सहस्रौ बीत ॥ ताके पा-
छे समुन नृप निज पदु पुर करि प्रीति ॥ समुनद्र ने फिर
बानवे गई पुत्र यहि भाति ॥ गरि बसाहि राजा भये
दुर्गादास जेहि नाति ॥ दुर्गादास बल बुद्धि से बसि लीन्हे
गढ़वार ॥ महा तेज ताको जगे प्रभु भये सहार ॥ ताके
तेरहौं पुत्र भे अमरसिंह हरि भक्त ॥ तासु तनय मम क-
न्ह है जानत है तेहि जक्त ॥ जैसे बासन कोदि सो बास सो
लखु बा होय ॥ केतनो दिन जो बीतई बास कहावै सो-
य ॥ त्योंही बिधि महराज के बंप्रा प्रसिद्ध उदार ॥ तहं ते
सब तरु कहत हैं श्री महराज कुमार ॥ २४ ॥ सोरठा ॥ रा-
मचंद्र कर दास अमरसिंह मन बचन ते ॥ पुत्र होन की २
आस से यो हरि पद कमल दृढ़ा ॥ १६ ॥ दोहा ॥ सेवत बंप्रा गोपाल

के तेहि सुत साहेब दीन्ह ।। सो प्रभु तत्व बिचारि के रहत ब्रह्म सो लीन ।। १७ ।। अब भाषो साइक अचल का-पी शुभ अस्थान ।। जाके दरशन हेत हित देव करहिं प्रस्थान ।। १८ ।। बिमल बंश रघुबंश के बसै बयालस डीह ।। ग्राम नेवादा में बिदित मम पितु सीतल सीह ।। १९ ।। चौपाई ।। जिले जौनपुर में गड़वारा ।। दुर्ग बंश तहँ बसै उदारा ।। कोल्हू ग्राम कुटी हम साला ।। तहँ बसि कन्त बिनावन काला ।। तहाँ ज्ञान अनुभव हम पाये ।। सो करि प्रगट ग्रंथ में गाये ।। बान सून्य अरु अंक मिलाई ।। तापर चंद देहु पुनि भाई ।। अंक रीति संवत दिखाता ।। जानि लेहु यहि बिधि बुध ज्ञाता ।। रस सर कर अरु चंद मिलाई ।। अंक रीति सन रचेउ बनाई ।। सून्य सप्त पुनि इन्दु बखानो ।। यथा अंक साके यह जानो ।। सावन सित पूनो जब आई ।। तब मेरे मन हुलसत भाई ।। या-चेउ धर्म पती ब्रत केरा ।। जेहि ते करु सब धर्म बसेरा ।। को पति ब्रता कवन व्यवहारू ।। कवन धर्म त्रिय सुगति श्रृंगारू ।। कवन ब्रत पति के पिय भायो ।। जेहि हित जीव देह में रारवो ।। अब पिय निरणय देहु बनाई ।। मैं गँ-वारि कछु जानि न पाई ।। करौं सदा पति पद करि पूजा ।। जानौं देव अवर नहिं दूजा ।। पढ़ों सुनों पति संग पुराना ।। बूझौं बेद शास्त्र कर ज्ञाना ।। आत्मज्ञान अरु तत्व बिभेदा ।। ब्रह्म ज्ञान कछु भाषत वेदा ।। सो सब सुनत रहौं दिन रती ।। एक लालसा सो मति मानी ।। जोरि दुवो कर पति सों पूँछा ।। एहु तो धर्म त्रियन कहं छूछा ।। कहो धर्म पति ब्रत बिचारा ।। जेहि सुनि नारि जाहि भव पा-रा ।। किमि करि रहै चरण महँ सेवी ।। जेहि धर्म होइ

नारिसन देवी ॥ २० ॥ दोहा ॥ कहहु नारि के धर्म जन स्वामी बिनवों तोहिं ॥ लोक वेद अस्मत्य मत सकल सुनावहु मोहिं ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ पूरुष नरहि योग जप कीन्हे ॥ ज्ञान विराग भक्ति मत चीन्हे ॥ सुत बित नारि त्यागि हरि ध्यावै ॥ वासुदेव जपि जगत न आवै ॥ हे पिय मोहिं चिन्ता यह आवै ॥ नारि अपावन किमि गति पावै ॥ सेवत देव होय विपरीती ॥ हरि कह भजै काम जेहि जीता ॥ नारिहि काम विदित जग माहीं ॥ तापर असुचि ज्ञान कछु नाहीं ॥ हे पिय मम संदेह मिटावहु ॥ त्रिय नारन कछु धर्म बतावहु ॥ तब पिय कहेउ स्वपति पद पूजा ॥ नारि धर्म ने धर्म न दूजा ॥ योग समाधि तीर्थ ब्रत नेमा ॥ सब तजि बिसु बसत एक प्रेमा ॥ सुचि अरु असुचि दुनर ब्योहारा ॥ दुन तजि बसत प्रेम सरि धारा ॥ सुनु प्रिय नाहि प्रेम सह फेरा ॥ वेद रीति कहो फल नेहि केरा ॥ सब धर्म फल पूरुष न्यागी ॥ प्रेम ने रहु हरि पद अनुरागी ॥ नारि प्रेम ने पति पद सेवा ॥ दूसर धर्म न दूसर देवा ॥ २२ ॥ दोहा ॥ रहु जो पिय की आयसु प्रीति होय नहिं क्षीन ॥ पूर्न चन्द्र समऊदय नित कबहुं न होय मलीन ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ पति पद प्रीति सदा जेहि केरे ॥ सो त्रिय है भवसागर बेरे ॥ कंत संग सहगामिनि नारी ॥ जनम हेत रचि विधि संवारी ॥ प्रबल अगिनि दुख सहइ न पारा ॥ विधि विपरीति येह पशु धारा ॥ ताकहं दरपा नारि नर जेने ॥ भयो नर्क भाजन ऋषि तेने ॥ जेहि मग जाय नगर गृह गोवन ॥ तेहि अघ ते सब होय अपावन ॥ जब पति व्रत मुख देखहिं लोगू ॥ तबहि होहि निज कर्म धर्म भोगू

जो पूरुषगृह निज सुत दारा ॥ ज्ञान विराग योग अनुसारा ॥ हरि माया छलि नेहि कर योग् ॥ लागि करावन सब विधि भोग् ॥ नाकर योग भ्रष्ट भै जबहीं ॥ वह नर नर्क पाव भै तबहीं ॥ सोउ पनी व्रत दरप्रान पावै चढ़ि बेवान हरि सदन सिधावै ॥ मरन हेत नीरथ जो गयऊ ॥ मरत्युन भयउ लवटिगृह अयऊ ॥ सोऊ पनि व्रत दरप्रान पावे ॥ हर्षि जाय हरि लोक सुभाये ॥ अन्न वस्त्र लगि गृह दुख पावा ॥ तब कछु गौन रसेवा लावा ॥ खड्ग धनुष गही सूर सुभाऊ ॥ हर्षित समर चले मन चाऊ ॥ लोह भार डर पाछे राखावा ॥ तीनि लोक अघ नेहि सिर छावा ॥ कोटिन धर्म कर्म करु जोई ॥ सती दरप्रा विनु सुगत न होई ॥ २४ ॥ दोहा ॥ सती सत्त पनि बर्न पद किमि पावत है नारि ॥ कवन धर्म सेवा कवन कहहु सो कंत बिचारि ॥ २५ ॥ मैहूं सुने पुराणमें नदपि अहै कछु भर्म ॥ तुव मुख सुनि दृढ़ नागहों तब भाखौं त्रिय धर्म ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ कहहु नारि कीरहनि गोसाईं ॥ पनि पूजन फल देहु बनाई ॥ कहहु भक्ति कर जस ब्योहारा ॥ अपर ज्ञान मत जो श्रुति सारा ॥ द्विज कन्या किमि पनि पद सेवा ॥ गै हरि लोक कवन विधि देवा ॥ बहुरि कहहु पासित्त ब्योहारू ॥ जासु प्रभाव भये श्रुति चारू ॥ पीपर सींचि दर्व नहिं लीन्हा ॥ अचल धर्म वोइ केहि विधि चीन्हा ॥ नेहि मिस साख्य प्रास्त्र ब्योहारा ॥ अपर ज्ञान मत जो श्रुति सारा ॥ गोप वधू कर चरित बखानो ॥ जेहि विधि कृस्न कीन्ह अपमानो ॥ बहुर उन्हे पनि व्रत उपदेसा ॥ हे पिय कहहु कहेव वोन तेसा ॥ फिर भाखौं तुव ब्योहारू ॥

जासु कीरतहरि सीस शृंगारू ॥ पूजै सकल भाव मन लाई ॥ नेहि बिनु हरि सिर बिथा न जाई ॥ सुर ऋषि त्रिय नेहि निज सिर धरहीं ॥ हे पिय कवनि खेल हरि करहीं ॥ हरि पद संत भजे जो कोई ॥ नेहि धारन बिनु सुगति न होई ॥ २७ ॥ दोहा ॥ केहि बिधि पति सेवन रहेउ पुर अनल महँ देखि ॥ कवन धर्म तेजग्नि जू वारन कियो विशेषि ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ बहुरि आप सत्यावति केरी ॥ कविदीन्हे सहि दुःख घनेरी ॥ कवन भांति रवि हीत्त प्रकासा ॥ अनसुइया लग देवन्त वासा ॥ तपसिहु रहही नारि समुझावा ॥ फिर गवास बहु बात बनावा ॥ दिव राजा कर चरित बखानी ॥ रहही धर्म जेन उन्नमजानी ॥ हरि गिरिजा किमि त्यागेउ कासी ॥ किमि फिरि भयेउ गहि थल बासी ॥ इन्द्र छले पति व्रत कहं जाई ॥ बहुरि भागिगै अनिडरपाई ॥ २९ ॥ दोहा ॥ निरनय सहित विवेक युत दीजे कन्त बनाइ ॥ जाके श्रवण करन में जीव मुक्त होइ जाय ॥ ३० ॥ चौपाई ॥ कहहु कन्त सत जस बिस्तारन ॥ नेहि मैं करब ग्रंथ त्रिय नारन ॥ योग बिराग ज्ञान बहुतेरे ॥ अमित ग्रंथ किये मुनिन घनेरे ॥ त्रिय धर्म कहु कछु सन्त बखाने ॥ सो मैं गुप्त परत नहिं जाने ॥ सोई मैं पिय मुख सुनि पावों ॥ सत्य विलास प्रबन्ध बनावों ॥ सती विलास नाम धरि पावन ॥ करो संत त्रिय सभा सोहावन ॥ दुर्गा बंप्रा मंडन तब बोले ॥ महा धर्म त्रिय यप्रा अनमोले ॥ सुनु कुमियासोइ धर्म विधाना ॥ वेद पुरान जस सुनेउ पुराना ॥ प्रात धर्म यह नारिन केरा ॥ पिय मुख लखि तब उठहि सवेरा ॥ पति के चरण सीस तब देई ॥ मुख धोवन हित

जल कालेई ।। नव मुख धोइ देइ कर दर्पन ।। करै देव अजपा कर अर्पन ।। बहु अनंद ने पतिहि रिझाई ।। अपनो गृह कारज करु जाई ।। करि असनान वस्त्र सुचि धारन ।। सिर सेंदुर की तिलक सँवारन ।। दृग अंजन दै भवरा कराई ।। पति कर ध्यान हृदय मों धराई ।। नव पियरुचि ज्यों नार बनाई ।। असन देखि अस को नलोभाई ।। ३१ ।। दोहा ।। सुद्ध सनोगुन चिनक रिरुचि सुचि जेवन बनाय ।। राम नाम ने सुद्ध करि सुनहु प्रिया मन लाय ।। ३२ ।। चौपाई ।। नाहि सिद्ध करि पिय पग धोई ।। अपना पान करै जल सोई ।। पियहि जेवाय दास अरु दासी ।। हिन कुटुंब जन गृह कर आसी ।। भोजन पात्र पिया कर आनी ।। बिमल ठौर धरि रावु सयानी ।। नाहि पात्र चिय भोजन करई ।। बिनु प्रयास भव सागर तरई ।। नव मैं कहेउं गोइ जानि रावो ।। चरणोदक जूठन फल भावो ।। अमर सिंह सुत कहेउ विचारी ।। चरणोदक कर फल सुनि नारी ।। जो तेहि पान करै चिय कोई ।। ता कर आवागवन न होई ।। जो चरणोदक सीस चढ़ाई ।। सकल तीर्थ जनु आइ अन्हाई ।। जो जल गिरै सीस ने धरनी ।। रसा पवित्र होय चिय करनी ।। सोइ अपने गृह सींचन करई ।। सकल सिद्ध नहँ दिन दिन भरई ।। पिय पद सलिल सो गंगा न सावन ।। एहि ने होय चियन नन पावन ।। जबनकि सलिल नाहि अँगरहई ।। तेहि नन परस पवन अघ दहई ।। जूठन खाय न करै विचारा ।। नाकह कबहुं न रवँगे अहारा ।। जो धोरवे कोइ छुवै प्रानी ।। गासै हरि प्रसाद अस जानी

॥३३॥ दोहा ॥ ठाकुर हारे हरि असन साधुन कर-
हिं बिबेक ॥ त्यों जानै पिय जूठन हिं रमिव प्रिया मति
एक ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ जैसे हरिहि भजत है साधू ॥
सुरति न टारि सकहिं पल आधू ॥ तैसै पिय पद सुरति
लगावै ॥ अन्त काल सो हरि पुर जावै ॥ हरिजन ना-
म भजहिं करि प्रेमा ॥ त्यों राखै त्रिय पिय सन नेमा ॥
संत भजहिं हरि लज्जा खोई ॥ त्यों पति भजै दोष न-
हिं कोई ॥ सुत बिन नारि भवन सब त्यागी ॥ भज-
हि नाम हरि जन अनुरागी ॥ त्यों त्रिय भजै पियहि
मन लाई ॥ हित कुटुंब तजि सखी सहाई ॥ मन ने
रहहिं संत सब त्यागी ॥ बाहेर पुच बिन अनुरागी ॥
मन ने करहि ब्रह्म कर ध्याना ॥ बाहेर सकल सुनहिं
दै काना ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ अंतस कर्म बिरक्त अति
बाहेर बिषयी णिनि ॥ करहि काज अनुहरि जग हृद-
य नाम की णीति ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ मुख ने कहे नाम
नहिं कबहीं ॥ हृदय न माहिं निरंतर जपहीं ॥ सब दे-
खन जग बौरा रहै ॥ अपना सुरति नाम की गहै ॥ प्रेम
माच बाना कछु धारन ॥ अहे संत सो नर्क निवारन ॥
जेहि बिधि संत आचरन गाई ॥ प्रिया सकल तोहि भेद
सुनाई ॥ इमि पिय भजै सखै नहिं कोई ॥ जारगर्भ र
जिमि अबला गोई ॥ मीन पपीहा की गति राखै ॥ प्रगट
नसो कबहूं करि भाखै ॥ यह बिधि नारी संत आचर-
ना ॥ भवनिधि पोत कहे उ त्रिय तरना ॥ कमठहि
अंड सुरति जस लागी ॥ त्यों पति चरण रहै मन पागी ॥
भागवती युवती जग जेई ॥ जो छल छाड़ि स्व पति पद
सेई ॥ ज्ञानवन्त प्रवीन सो नारी ॥ तासु कीर्ति पतिव्रत

उजागरि ॥ सती सिरोमनि है तिय सोई ॥ जासु प्रीति प-
ति पद परहोई ॥ योग सिद्ध सोइ सन्त सयानी ॥ जो करु
पति आज्ञा सुख मानी ॥ पति पूजन कर फल जस होई ॥ प्रिया
न नेहि सन राखौं गोई ॥ कहौ कछु कनुव प्रेम बिचारी ॥ प-
ति व्रत धर्म करै जो नारी ॥ करै सत्य पति पद कर पूजा ॥ नी-
ति लोक नेहि सम नहिं दूजा ॥ ब्रह्म रुद्र हरि देव भुआगा ॥ प-
ति बर्ना के आज्ञा कागा ॥ ३७ दोहा ॥ सकल देव रक्षा करैं प-
ति सेवै जो नारि ॥ अंत काल हरि लोक नेहि यश गावै सु-
ति चारि ॥ ३८ ॥ पिय आज्ञा बिनु नारि जो पूजै देव बिधान
॥ तौ नेहि पति आयु घटै नाको नरक निदान ॥ ३९ ॥ बर्त क-
रै नीरथ करै दान धर्म जप योग ॥ स्वामी भक्ति बिहीन तिय
पावै यम पुर भोग ॥ ४० ॥ चौपाई ॥ पति आज्ञा कछु भंग न हो-
ई ॥ जानै देस आवर नाहिं कोई ॥ पति के हन जीवन नहिं राखै ॥
मृषा बचन मुख कबहुं न भाखै ॥ हृदय माझ दाया को का-
रन ॥ काम क्रोध सब करै निवारन ॥ पति कर ध्यान सदा उर
माहीं ॥ अपर लालसा कछु मन नाहीं ॥ सुनु प्रिय जेह नर
के अस नारी ॥ काहे न सो नर रहै सुखारी ॥ जयन पत्र सो र-
ण में पावै ॥ नाके निकट प्रान नहिं आवै ॥ पितु कुल स्व
सुर कुटुंब समेना ॥ नारि धर्म बसु विस्तु निकेना ॥ सुंदर
साजो जस भरहई ॥ वेद पुराण संत सब कहई ॥ सुत क-
न्यानेन कर सुख पावै ॥ जो नित पिय चरणन चित लावै ॥
जे अनन्य गनि पिय पद सेवा ॥ सकल सृष्टि कर जानहिं भेदा
॥ ४१ ॥ दोहा ॥ करतल गनि आमलक ज्यों त्यों जग सब
नेहि पास ॥ पिय सेवा दृढ़ मन बसै करै कवन की आस ॥ ४२ ॥
॥ छन्द ॥ नहिं आस रहन निरास जग मैं अगम मग पग ना-
हिं धरी ॥ करि ध्यान ज्ञान बिचारि पिय पद भजन नित ज्यों

जनहरी ॥ नहिं राग लोभ न मान मद हृष्टि एक टेक बिचा-
रहीं ॥ ज्यों हरिन कर धरि अरनि दृढ़ तब भूमि में पगु धार-
हीं ॥४३॥ दोहा ॥ एक तपस्या एक बल एक आस बि-
श्वास ॥ मनसा वाचा कर्मना पनि पद परमहुलास ॥४४॥
इति श्री महि मंडल श्री महाराजाधिराज श्री रामचंद्र पदपद्म
लुब्धे भ्रमर अमरसिंह सुत साहेबदीन तस्य नारी बिरचि-
तायां सती बिलासे धर्म शास्त्र मते त्रिय भक्ति देपूरा वर्णनो
नाम प्रथमो बिलासः ॥१॥ दोहा ॥ कंत बनावहु नासु
गनि जा कर पनि पदेपूरा ॥ रहै रहनि बुद्ध मह कवनि गटही
यती की भेपूरा ॥ १॥ चौपाई ॥ महाराज यह बिनय हमारी
॥ कहहु त्रियन हित जन भैहारी ॥ दुर्गबंपूरा कुल कमल
दिनेपूरा ॥ मोहि सनहहै कहेउ उपदेपूरा ॥ सुनकबिदे-
सी कामबिहीना ॥ मूर्ख रोग बस पर त्रिय लीना ॥ एव-
दपुर्य नारि दुखएका ॥ सुनहु प्रिया नेहि धर्म बिबेका ॥
एकहिने सब कर गुन जानो ॥ मेरो बचन सत्य करि मा-
नो ॥ कर्म बस्य जो जाय बिदेशा ॥ मौ मन कर्म बपुदेइ
कलेपूरा ॥ पर्यहास्य आभूषणात्यागै ॥ षीव खंड सन
अन्न न पागै ॥ पैंड्या पौढ़न पग महचाना ॥ पनि के हे-
न भजै भगवाना ॥ सीस मध्य में सुरति लगावै ॥ सहस
पत्र कमलहि बिहसावै ॥ नासु मध्य पिय रूप निहारी ॥
नेहि पूजै भव हेत बिसारी ॥ २॥ दोहा ॥ नख सिख ने सब
कंत बपु निरखै ध्यान लगाय ॥ पूजा मन हीं ने करै खोड़-
श विधि हरषाय ॥ ३॥ चौपाई ॥ कहों कहा नेहि पुन्य
अपारा ॥ शारद प्रेषन बरनै पारा ॥ करै अमित धर्म जा-
रै कामा ॥ अनसकर्न जपै हरि नामा ॥ पनि कह करत
जवन व्यवहारा ॥ तबचकी फिर गगन मँझारा ॥ एही

बिधि रहनि रहै जो नारी ।। बसै मीन होय पिय पद बारी ।। प्रिय सोइ सनी सन्त जेहि केरे ।। भाखौं यथा ज्ञान कछु मेरे ।। जन्म नायका है बहु नेरी ।। उनमसोइ जो होय पतिचेरी ।। भक्ति करै पति कन्त होई ।। जानेहु धर्म रूप त्रिय सोई ।। नवमैं कहेउ भक्ति कस होई ।। जाकहँ कहन सन्त सब कोई ।। तुमहू कहहु कन्त त्रिय हेतू ।। पारबती मन कर हर्ष केतू ।। कवन जन्त्र नामहँ पिय ऐसी ।। कछुएक मोहि बतावहु तेसी ।। तब साहेब अस बोलेउ बानी ।। पारब्रह्म प्रगट तनहि नानी ।। एहि ते अज हरिहर बस होई ।। भक्ति अनन्य कहब मैं सोई ।। ४ ।। दोहा ।। नौधा प्रेम लक्षना परा भक्ति समुझाय ।। जो भुशुंडि के हिय बसे सो मैं देउँ बताय ।। ५ ।। इहै भक्ति नारीन की इहै सन्त मत बान ।। जाके हृदय बिचारि ते जीव परम पद जान ।। ६ ।। चौपाई ।। सुनि गुरु बचन लाग हिय मोही ।। नौधा भक्ति सुनावहु तोही ।। जाके करत होय त्रिय पावनि ।। अति पति ब्रता कन्त मन भावनि ।। प्रथम भक्ति एहि मुक्ति निसेनी ।। इहउ लोक अमित सुख देनी ।। सुमिरै कन्त हृदय धरि ध्याना ।। सुनै कन्त को गुण गन नाना ।। कहै कन्त गुण बिमल अनेका ।। चितवै कन्त जानि प्रभु एका ।। चरण पूजि आरति करि नाना ।। फिर जेवाय दीजै जल पाना ।। सेज बिछाय कै चरण गहि बावै ।। बहु परिहास्य कछु बचन चलावै ।। ताके ऊपर ज्ञान कहानी पूछहि पतहि नारि गुण बानी ।। नौधा भक्ति कहेउँ पिय सोई ।। मुक्ति रूप एहि कह सब कोई ।। प्रेम लक्षना कहौं बखानी ।। जामहिं भूले सारंग पानी ।। ७ ।। दोहा ।। प्रेम जगावै बिरह को बिरह जगावै जीव ।। जीव जगावै ब्रह्म को हरि

मिलावै पीउ ॥ ८॥ भुजंग प्रयात ॥ जबै नारि को प्रेम हू
कन्त लागै ॥ गई सुद्ध बुद्धै सबै धीर भागै ॥ रहै राम नामै
बरै अग्नि ज्वालै ॥ ऊढै स्वास ऊस्वास मेंचिन हालै ॥ रव
ड़ै रोम आंसू चलै प्रेम बाढ़ै ॥ मरी सी परीहै धरै ध्यान गाढ़ै
॥ वोही ध्यान स्वामी महा पंथ सूझी ॥ महाराज कर्ता नबै
वान बूझी ॥ ९ ॥ सवैया ॥ नीर बिनाजैसे मीन अधीर वो
क्षीर बिना कैसे बालक जीवै ॥ चाहक सोर करै दिन रैनि भा
रैजब स्वानि नबै सुरवहीवै ॥ पीर भई जाके देह अपार बि
ना औषधी कहो कैसे करीवै ॥ याजना दंपति की गति आनि
जुराफ मरै बिछुरै निज पीवै ॥१०॥ नाराच ॥ नसान लाज
लोक की न वेद शास्त्रजी धरै ॥ न संक देव यक्ष की न भूत प्रे
त नेडरै ॥ सुनै न बात और की द्रसै न और दृष्टि में ॥ कहै न
अस्य और बान ज्ञान ध्यान सृष्टि में ॥ ११॥ सवैया ॥ प्रेम विभ
क्ति लगी घट भीतर भूलि गये सब नेह वो नाते ॥ भूख न
प्यास लागत नहिं वाके सो नींद न आवत है दिन राते ॥ सुख पीर
भये बल धीर गये धुध कार हिये जैसे लोहार के भाये ॥ ए
ह प्रेम कि बान कहां लो कहों त्रिय प्रान भये हरि के संग साथै
॥ १२॥ दोहा ॥ प्रेम भक्ति रस गोपिका रसिक रहे सब का
ल ॥ वौरी लग दौरी फिरै मोहन मदन गोपाल ॥ चौपाई ॥
सुनु प्रिय कहो सयन्व सुभाउ ॥ जैसे हरि अर्जुन मन चाउ
॥ सब दिन स्वारथि नन्द कुमारा ॥ करहि मनहु चाकर
व्योहारा ॥ सभा मध्य जब श्रीपति आवै ॥ सबहि अर्घ
पादार्घ करावैं ॥ सौंपि सिंहासन तेहि कहं देहीं ॥ अपुना
दास्य भाव धरि लेहीं ॥ एह विधि त्रिय राखै मन माहीं ॥
ताकहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥ और एक प्रिय सुन मन
दा ॥ दास्य भाव महं है प्रहलादा ॥ कोटिन भांति पिते

दुखदीना॥ अपुना भजन निरंतर कीना ॥ कोटि कलेपुर दुःखवियआड़ै ॥ पतिके भजननकबहूं छाड़ै ॥ परा भक्ति है अदभुनबाना ॥ सनक सनन्दन तेहि पद ग्ना ॥ भयेएक नन भजनत्त छूटी ॥ हरि यपुरायं रंक जिमि लूटी ॥१४॥ छंद नोमर ॥ विक्षेपक बहु नहोय ॥ पिय के निकट नियसोय ॥ चियएक टक रहुजोय ॥ पलएक चंच नगोय ॥ नहं सदा सनमुखरहै ॥ करजोरि बानें कहै ॥ एह परा भक्ति प्रकास ॥ तेहि सत्य लोक नेवास ॥१५॥ सवैया॥ स्वामि के साथ मिली रस पीवन भिन्ननहींतियया जग माहीं ॥ ज्यों जल बीचि भये जुग नाम सों पाये न्टवा एजलेरहिजाहीं ॥ आरिवन में पुनरी दृगएक नहीं कछु भिन्न सो भिन्न देखाई ॥ नारि औपुरुय को भाव रही एह भक्ति प्रिया सत मारग माहीं ॥ १६॥ हरिसंग भा॥भये एक संगी ॥ नहीं भिन्न अंगी ॥ करी सो बिलासी ॥ धरे भावदासी ॥ १७॥ दोहा ॥ परा भक्ति बरनत्त कियो सन्त चियन के योग ॥ अब प्रिय तोहि बनाइहों जो यम पुरपावहिं भोग॥ १८॥ चारि जानि है नायका चारि भांनिकोधर्म ॥ पदुमिनि चित्रिनि शंखिनि हस्तिनि भोगत कर्म ॥ १९॥ चौपाई ॥ परा भक्ति है पदुमिनि माहीं॥ प्रेमलक्षणा अधिक सोहाहीं ॥ कबि सुगंध ते पदुमिनि जानै॥ सोहै रसिक रसै पहिचानै॥ सन्त कहैं प्रिय पदुमिनि नेई ॥ जो छल छाड़ि कंत पद सेई ॥ नौधा भक्ति चित्रिनी जानै ॥ दास्य सख्य बस वै पहिचानै॥ चित्रिनि चतुर नारि प्रिय चीन्हो ॥ जिन रस राग कंत बस कीन्हो ॥ उत्तम का अस भा वे उं प्रीती॥ अब प्रिय सुनहु जो मध्यम रीती ॥ भूदेहु कछह पति सन करई॥

कामहेतु परपति मन धरई ॥ क्रोध लोभ मद मान अपारा॥ पतिनज़ि परपति करे पियारा ॥२०॥ दोहा ॥ निज पति देखत हीजरै परपति करै पियारा॥ सोनारी अघ पाचहै नारि बिरंज़ि बिचार॥२१॥ चौपाई ॥ त्यागी पुत्र न मनतेहि भावै॥ भूषण भोजन ते मन लावै॥ तेनारी पति सदा मलीना॥ अन्न द्रव्य भोजन तेदीना ॥ ताकर कुल कुटुंब दुख पावै॥ तासु दुपा ऋषि कवि को गावै॥ तेहि घर सब दिन भूत निवासा॥ सपत्नेहु देव करैनहिं बासा ॥ अंतकाल सो यमपुर जाई ॥ तेहि महकष्ट पाव समुदाई॥ पुरुष रूप नहं अनल अरंभा॥ तेहि महं बड़ लोहन के खंभा॥ तब तेहि बांध खंभमहं जारा॥ कहहिं कि परपति तुमहि पियारा ॥ जिय नहिं त्याग पूरण हि नारी॥ हाय हाय करि करहि गोहारी॥२२॥ दोहा ॥ कलमलात कस कनज़रत चिधरत हाहारवाय॥ करि बिलाप रोदति बदति अमित दुख कहँ पाय ॥ २३॥ चौपाई ॥ तब यमदूत हाथ लै भाला॥ मारि तासु तन करहिं बेहाला॥ हा पितु मात बंधु नहि कोऊ॥ पुत्र मित्र परिवार न सोऊ॥ परतेकिंहु उनेह पति त्यागी॥ तेहि अघ जरत अंग अब आगी॥ कहा कीन्ह अधर्म जगजाई॥ हे ईश्वर अब जाति न पाई॥ जो जननीउ अधर्म एहि हाला॥ तौ डरिनिउ परपति जिमि काला॥ मैं जगज़न्म बिषै दुम लावा॥ आपन कीन्ह आपु फल पावा॥ अपनइ करनब बिगरु बिधाता॥ स्वदोष दुख परि पछिताता॥ बिनु जाने मधु सन बिष खावा॥ अब तनु जरत अमित दुख पावा॥ २४॥ दोहा ॥ बढ़ी रारि संसार में इहै भये दुख भार॥ सब निरदय दाया रहित कोउ

नहिं सुनै पुकार ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ शरण सुरव लाग दपुण रह मेरी ॥ हे पति एक शरण अब तेरी ॥ पति करि नाम जपत जब जाना ॥ हेन सुनत यमदूत जुड़ाना ॥ तब निज पतिहि जोहारेउ जाई ॥ अब चिय भजै कन्त मन लाई ॥ सोइ यमराज भये धर्मसीला ॥ कहेउ जाय करु बंधन ढीला ॥ शेष भये दुरवसिथिल शरीरा ॥ तबसो करि बिचारि मति धीरा ॥ अब केहि भांति जाउं मृत्युलोका ॥ सेवो पतिहि जाय सब सोका ॥ यह बिलाप जब करि बहु काला ॥ तब कबहूं यम होहिं दयाला ॥ तब तेहि जन्म देहि क्षिति माहीं ॥ पतिहि भजे ते कष्ट न साहीं ॥ जो न भजे पतिहृदय बिचारी ॥ निश्चै रंडा होय सो नारी ॥ २६ ॥ दोहा ॥ क्रोधी कुष्ठी बधिरशठ अन्ध द्रव्य जे हीन ॥ ऐसेहु पतिते विमुख स्त्रिय जन्म जन्म रहु दीन ॥ मनसा वाचा कर्मना पति सो राखै नेह ॥ नजत न प्रीति पपीहरा ज्यों पबि बरख न मेह ॥ ऊंची चिया पपीहरा परपति जानि तड़ाग ॥ जानत गरल समान तेहि कबहि न करु अनुराग ॥ २७ ॥ ॥ छंद ॥ अनुराग रहित बिराग युत चिय सकल नरकहु देखही ॥ ते पाय पिय पद भक्ति आपुहि धन्य जग महं लेखही ॥ सोइ पाय सुरदुरलभ पदारथ बहुरि जग नहिं आवही ॥ सुनु प्रिया अब नासु महिमा शेषगा रद गावही ॥ २८ ॥ दोहा ॥ महिमा अगम अपार तेहि शेष न पावहिं पार ॥ नारि बिरंची कंन सुरव सुनि सनकीन्ह बिचार ॥ २९ ॥ इति श्री मद्दिमल श्री महाराजाधिराज श्री रामचंद्र पद पद्म लुब्ध मधुप अमरसिंह सुत साहेबदीन तस्य नारि विरंचि नाथा सती बिलास

ज्ञान समुद्र नाम कंन मते भक्ति दंड वर्णनो नाम द्वितीय विलासः ॥ २ ॥ सवैया ॥ सोइ रही मैं जु मोह निशा निज पति चरणा अभागी ॥ जन्म अनेक गये सपना सम एकहु बेर नहो अनुरागी ॥ नानेदयाल भये मम कंत बनावो है ज्ञान हमै सुख लागी ॥ सुनो पति बान भयो परभात उदै रवि ज्ञान नबै उठि जागी ॥ १ ॥ दोहा ॥ स्वामी नुमरी कृपाते भयो ज्ञान परगास ॥ अपर कहहु त्रिय सन कछु बाढै धर्म बिलास ॥ २ ॥ चौपाई ॥ दुर्ग बंश कुल कुमुद मयंका ॥ नेहि सन फिर मैं कीन्हेउ शंका ॥ निरगुन पूजन कंत बतायो ॥ सो नौ बिना ज्ञान नहिं भायो ॥ जो नारी है ज्ञान बिहीना ॥ ना कर पूजन कहो प्रबीना ॥ नब किमि पूजि सो गति सोपावै ॥ जो दुरलभ पुरान श्रुति गावै ॥ नब पिय कहेउ सुनहु अज्ञानी ॥ तोर प्रश्न किमि कहो बखानी ॥ बिना ज्ञान सुख सुगति न पावै ॥ ज्यों कदली नहिं सार लखावै ॥ कोउ कहै मृग तृस्ना जल पूरे ॥ है प्रसून अकास कछु दूरे ॥ बाँझ सुअन मारवे रत नाना ॥ कोउ कहै ससक सीस बिखाना ॥ जिमि एह सकल झूठ पिय बाना ॥ ज्ञान हीन गति मि सुख अज्ञाना ॥ ज्ञान ने भक्ति होत सुख कारी ॥ आगे सुन पाछे महनारी ॥ ३ ॥ दोहा ॥ नब मैं कहेउ कंत सन नारिहु दुरलभ ज्ञान ॥ नहिं सन संगम वेद श्रुति जाकर कंत नदान ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ कन्या पितु गृह बाले सुभावा ॥ होत ब्याह बंदी गृह पावा ॥ नहें पुनि एक कंत कर संगा ॥ सो कामी मति मन्द अभंगा ॥ ताप पूर्व पाप नेहि व्यापा ॥ तब रहि गई आप की आपा ॥ ताकर कहहु कंत उद्धारा ॥ जेहि ते भव दुख होइ न भारा ॥ एह सुनि कंत बिहँसि अस बोले ॥ कीन्हेउ प्रश्न प्रिया

अन्नमोले ।। अमरसिंह सुत कहेउ बखानी ।। पूज्य सगुन रूप पनिजानी ।। उत्तम कहेउ कानि स्वरूपा मध्यम मृत्तिका पात्र अनूपा ।। रही नीनि महँ जो मन भावै । निजपनि की एक मूर्त्ति बनावै ।। सदन मांहि धरि राखै सोई ।। पूजै नाहि अपर गनि खोई ।। मन वच कर्म प्रेम जो लावै ।। कोटिन अश्वमेध फल पावै ।। कोटि तीर्थ व्रत योग समाजा ।। जोय ह भांनि धरै दृढ़ ध्याना ।। ताहि निवेदन भोजन करई भूषण वस्त्र अपि अंग धरई ।। जलौ पिये नौ ताहि देखाई ।। नेहि ठकिष्ट विन कछु नखाई ।। एक पुरुष सम प्रनि माजानै ।। और पुरुष सुत पितु सम मानै ।। चन्दन धूपदीप तुलसीदल ।। करि नैवेद बस्त्र पूजन अल ।। करै सदा एहि विधि व्यवहारा ।। सो भवपार जात नहि बारा ।। नयोगी दुर्लभ गति पावै ।। नासु सुयश अस कवि को गावै ।। जो जन्मै पनि मिलै सुलीना ।। धन आयुर्बल बली प्रवीना ।। ५ ।। दोह ।। अमित सुखद लहु लोक यह सुयश प्रताप प्रकास ।। मनसा बाचा कर्मना करै न दूजी आस ।। सोई सती कहावै जो करुनिहं विधि कोय ।। कोटि आवर्ति जरै संग एहु सम कबहुं न होय ।। ७ ।। ।। चौपाई ।। संग जरै सो सती कहावै ।। यहु उलटा पद को जड़ गावै ।। संग जरै सहगामिनि नारी ।। जननमरन को नेहि दुख भारी ।। आवागवन नाश नहिं होई ।। जनमत मरत रहै पुनि सोई ।। सती न जन्म फेरि जग पावै ।। जोनिज पनि पद सुरति लगावै ।। सत्यलोक महँ करै बिहारा ।। जब नक पोष धरै महि भारा ।। तब नक सो करु भोग अनेका ।। जो त्रिय सती धर्म एहु देखा ।। सहगामिनि हसती सब कहई ।। जो पंडित अरु मूरुख

अहई ॥ भाषेउ कंत सकल व्यवहारा ॥ मोहि अस अधम किहेउ ठढ्ढारा ॥ दुर्गबप्पा कुल बन्न घन स्वामी ॥ बार बार पदकमल नमामी ॥ एक प्रश्न मैं पूछत अहऊं ॥ तासु भेद प्रभु जाना चहऊं ॥ जबरज करि अशुद्ध त्रिय पावै ॥ तबकिमि पियपद सुरति लगावै ॥ पूजन छाड़ि सकै त्रिय कैसे ॥ पीनि न घटन मीन जल जैसे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ ताकी निरनय सहिन पिय दीजे मोहिं बनाय ॥ जाने छूटै सकल भ्रम बिनय करों सिरनाय ॥ ९ ॥ चौपाई ॥ बोले दुर्गबप्पा कुल भूषन ॥ है दिन तीनि नारि कहँ दूषन ॥ प्रथमहि रज चंडालि स्वरूपा ॥ द्वितिय ब्रह्म सोधान अनूपा ॥ तिसरे दिवस धोबनी गावै ॥ चौथे बार शुद्धता पावै ॥ शुनि दिन अस नहान जब कीजे ॥ तब कछु अन्न दान करि दीजे ॥ जबनकि करै सकल अस्नाना ॥ तबनक नहिं पूजन बिध्याना ॥ रहै भवन महँ छिपकै नारी ॥ ताके छुवन होय अघ भारी ॥ पूरुष दरस सेज पर नाही ॥ बिनु प्रयास सो यम पुर जाही ॥ अपर कहांलगि कहोंबि भेदा ॥ सहादोष नेहि बरनेउ वेदा ॥ हृदय माझ पति ध्यान सो धरई ॥ निरगुन पूजन तब नकि करई ॥ गुन ते पाप पुन्य जग माही ॥ स्वर्ग नर्क सब भोग कराहीं ॥ १० ॥ दोहा ॥ निर्गुन ब्रह्म सएक है नहँ नहि कबहिं अशुद्ध ॥ अमल ब्रह्म व्यापक जगत कहेउ बेद मति बुद्ध ॥ ११ ॥ चौपाई ॥ भे सो नित्य रहै कर जोरे ॥ अज्ञा नाथ सीस पर मोरे ॥ केतनौ पति बेकार जो पावै ॥ तबौ विष्णु नेउ तम ध्यावै ॥ अनिसै प्रेम करै पति जबहूं ॥ दासी भाव न छाड़ै तबहूं ॥ मन क्रम धन सब पति कर जाने ॥

अहंकार नहिं चित महँ आने ॥ कोप करन जो पूरुष आवै ॥ नौ दासी होय हुकुम बजावै ॥ मति मंत्री सम देइ सुहावन भोजन जननी सम करवावन ॥ बिपति काल दृढ़ मति समुझावै ॥ जग दुर्लभ अस चिय जो पावै ॥ पूरुष हित की बोलै बचना ॥ सब बिधि करै सुख की रचना ॥ पति देखत मन आनँद आवै ॥ ज्यों रवि देखि कमल सुख पावै ॥ १२ ॥ दोहा ॥ पति ब्रत को धर्म अमित है प्रेम सकहिं नहिं गाय ॥ कंत हमारे कृपा करि कछु एक दीन बताय ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ दुर्ग बप्र कुल सुयप्र बढ़ावन ॥ दिहेउ ज्ञान अघ ओघ नसावन ॥ नारि दोष गुन कहेउ अनेका ॥ पुरुषहु कर कछु कहहु बिबेका ॥ हँसेउ कंत सुनि यह मम बानी ॥ अबलागेहु प्रिय करन सयानी ॥ एक नारि ब्रत रामनरेशा ॥ दूसर कोउ न सुनेउ एह देशा ॥ एक नारि ब्रत जो नर धारी ॥ तेहि जानेहु प्रिय प्रगट मुरारी ॥ जो लंपट बिषयी नर कामी ॥ मूर्ख अधम पर त्रिय अनुगामी ॥ तिन कर पाप कल्प नहिं गावै ॥ प्रेम प्रारब्ध पार न पावै ॥ सोइ प्रनक्ष अबदेखहु बामा ॥ सो अघ भोग करत घनश्यामा ॥ अच्युत नाम बिदित जग पावन ॥ बिनु कर भै अघ ओघ नसावन ॥ सो सरूप मैं आखिन देखा ॥ जग नाथ पर रूप बिसेखा ॥ १४ ॥ दोहा ॥ कालहु कर्म सुभाव गुन सब परत्री यदुराय ॥ तदपि पाय दूसर जनम बिनु कर बपु दरशाय ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ नव मैं कहेउ सुनहु हो स्वामी ॥ जानि मोहि आपन अनुगामी ॥ अपर कहहु त्रिय धर्म बिचारी ॥ तेहि सुनि छूटै

सकल अघ भारी ॥ बिनवौं तुव चरणन धरि माथा ॥ अपर कहहु जनम त्रिय गाथा ॥ कवन कीन्ह अस धर्म सुहावा ॥ जाकर पुन्य सुयश जग छावा ॥ नवपिय कहेउ पुन्य बड़ तोरा ॥ सुनि तुव बचन भगत मन मोरा ॥ जो त्रिय सुनु पति ब्रत दृढ़ नेहा ॥ सो करि सत्य लोक महँ बासा ॥ अवन मात्र छूटै सब पापा ॥ जनु किये अस्नान योग ब्रत जापा ॥ पापिउ नारि सुनै मन लाई ॥ निश्चै पाप सकल मिट जाई ॥ दोहा ॥ नव मैं कहेउँ ज्ञान सन अस त्रिय जग में कौन ॥ पति तारै परिवार लै बसी जाय हरि भौन ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ नवपिय कहेउ सुनहु रे बामा ॥ अवध पुरी एक द्विज गुन धामा ॥ ताके युगल पुत्रिका भयेऊ ॥ बिनु ब्याह एक नपु कहं गएऊ ॥ कीन्ह जाय नप तीर्थ अपारा ॥ रहै एक पति चरणा अधारा ॥ नपुसिनि गै लघु भगिनी गेहा ॥ तोहि देखा पति पद बहु नेहा ॥ पति पद पूजि अंब फटकारा ॥ मिलत नाहि तेन कीन्ह बिचारा ॥ कहे सफेकुजल नुह केहि लागी ॥ नेउ कहेपि नुरटहु लागेउ आगी ॥ जलपहुंचे पितु आग बुझानी ॥ पितु रटहु गै नपसिनि अकुलानी ॥ टेखेसि जाय सत्य सबबाना ॥ कहु अकुलाय सुनहु पितु माता ॥ ब्याह मोर अब करहु सबेरा ॥ नव नेउ कोपि कुष्टि बरु हेरा ॥ कुष्टी पूजन करै सो नारी ॥ देखन लोग देउ बहु गारी ॥ एक बार सुनि नान नरंगा ॥ कुष्टी कहेसि जाउ केहि संगा ॥ कांधे चढ़ाय ताहि लै गएऊ ॥ सभा निकट ने सोभित भएऊ ॥ १८ ॥ दोहा ॥ कुष्टी कहेसि प्रिया सुनहु जाहु पुत्रलीपास ॥ मोहि पोढ़ा बहु नाहि संग पूजै मन की आस ॥ १९ ॥ तब तहं गई पनी ब्रता कहेसि हेन कर जोरि ॥

नव नेइ कहा ले आउ पनि लरवौं चानुरी नोरि ॥ २०॥ चौपाई ॥ नव नेपनि शय्या पर गएऊ ॥ हरि बेवान नव चिय कह अएऊ ॥ चिया अस कहेउ रघि नसन बाना ॥ बिनु पिय कहु को हरि पुर जाना ॥ नव नेहि जाय नाथ कहँ टेरा ॥ प्रभु कहं दंपति आनु सवेरा ॥ स्वर्ग हेनु बोली पनि पाहीं ॥ सो कहे बिनु बिस्वा नहिं जाहीं ॥ बिस्वा कहै राज जब जाई ॥ राज नुर न परिवार बोलाई ॥ अवध पुरी जन जीव बिधाना ॥ सब कहं हुकुम दीन भगवाना ॥ चढ़ि बेवान सब हरि पुर गएऊ ॥ जैजै प्राब्द अकाशहि भयऊ ॥ धन्य धन्य पनि देवन नारी ॥ नेहि समान को सृष्टि मँझारी ॥ २१॥ दोहा ॥ पनि ब्रत गई स्वर्ग कह कुल परिवार समेत ॥ कंत हमारो कृपा करि हमहिं सुनाई हेन ॥ २२॥ त्रिभंगी छंद ॥ पिय हेनु सुनाई सो मन भाई पाई ज्ञान अनूपा ॥ निज पति पद बंदै नाजि सबछंदै नेहि बंदै सुर भूपा ॥ सोइ धर्म सो हावनि पिय मन भावनि हावनि धर्म स्वरूपा ॥ नेहि नेज प्रकासै यम कहं त्रासै फिर न परै भव कूपा ॥ २३॥ गीतिका छंद ॥ भव कूप परै ननारि कबहीं जो भजै पति प्रेमने ॥ सन सभा सोभित नासुयपू चिय जो रहे गृह नेमते ॥ बिधि लोक प्रापद नेहि सरा हत रहत जग में क्षेमते ॥ सुनु प्रिया धर्म अनेक जग एहि सम नहीं सन नेमते ॥ २४॥ दोहा ॥ सती साधु ए जगत में अगम पंथ पगु दीन ॥ धर्म मध्य ए बसत हैं ज्यों जल में बसु मीन ॥ २५॥ इति श्री मद्दि मल श्री महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्र पद पद्म तुष्ये धमर अमरसिंह सुत साहब दीनतस्य नारि विरचिनायां सती विलासे सिव सती भाषि नउपपुराणे मने पनि पूजन बिधान वर्णनो नाम तृतीय

विलास:॥३॥ दोहा॥ एहऊत्तम इतिहास पिय मोहिं लागे
उ अतिनीक॥ जो विय सुनि समुझहि कथा नेहि लागिहि
जग फीक॥ १॥ चौपाई॥ हे प्रभु मोहि दयाचिन हेरे॥ कथा
पात्र तुम रघुपति केरे॥ राम भक्ति कर फल पनि सोई॥
जेहि उर बसै सो सीतल होई॥ सोई सीत करि मैं सुख पा
वा॥ त्रिविधि ताप भव दाप न सावा॥ बहुरि कहो कछु र
कथा पुरानी॥ जेहि नेहोय अखिल अघ हानी॥ एह र
इतिहास कहेउ अति पावन॥ सकल सृष्टि पनि ब्रत म-
न भावन॥ दूसर सुनु इतिहास अनूपा॥ है सुभ चरि
त नारि धर्म रूपा॥ सुथल देपुर एक राम नरेपुर॥ धर्म र
अमित नहि अघ लव लेपुरा॥ सदन समीप हि चल द्रुम सो
हा॥ सो सुख वास्त्र लखि नृप मन मोहा॥२॥ दोहा॥
मुनि धर राज बोलाइ कै पूछा पीपल हेतु॥ कहहु कवन
अघ कुलि पुरा सम फूट धर्म कर सेतु॥ ३॥ चौपाई॥
परिडत करि बिचार सब बोले॥ सुना द्रव्य ने अधरम
होले॥ कन्या बिक्रि भई तुव देपुरा॥ नेहि ने चले द्रुम सूखि
नरेपुरा॥ ताहि खोज नृपदेपुर निकारा॥ द्विज सत्त पूछेउ
अघ उद्धारा॥ कहे बिप्र पनि ब्रत जल देई॥ बिनु प्रया
स सारवा द्रुम लेई॥ एह सुनि सकल नारि बोल वावा॥
रानी आदि कहुकुम लगावा॥ सींचे सकल हरित नहिं
भयेऊ॥ द्विज चाकर रूप सत्त अस कहेऊ॥ नाथ ना
रि सम पुन्य किरासी॥ अवध त्रिबेनी की न्हे सि कासी
॥ देव सेव किनि सुबुध सयानी॥ मम दरपान करि या-
सन पानी॥ राय हुकुम ने सदन सिधारा॥ सूकर स्वामि
नि देखि अगारा॥ नेहि पूछा सब कहा बुझाई॥ द्विज
हि नारि एक चरित लखवाई॥ सुनु भसुर घर जायेउ जबहीं

नारि बोलि अस भाषेउ नबहीं ॥ कहेउ कि सात पुरुष कीनारी ॥ सोसींचैजबकरलै बारी॥ ताके सींचन फूटहिसारवा ॥ राजनने पण्डित अस भाषा॥ ४॥ दोहा॥ करै कबूल नारिजब नवले बस्त्र सपेद ॥ नाहि पहिर सैसोचिहौं छूटहि वृक्ष करेद॥ ५॥ चौपाई ॥ एहसुनि ब्राह्मन गानिज गेहा ॥ पूछा नारिसो अनि नवनेहा ॥ सकल कथा सुनि त्रिय हरषानी॥ कीन्हेउ बटसत बासन सानी ॥ नासन रनि करि दुनजल देहौं ॥ आधी राज्य रूपनि कै लेहौं ॥ एहसुनि द्विज लै बस्त्र नवीना ॥ सूकर पानि पानिनिह सोदीना ॥ नाहि पहिरि सो जल लै सींचा ॥ पुन्य सुमिरि मैं पल्लव खींचा ॥ पीपर देखि रूपनि हरषाना ॥ कहेसि लेहु द्विज क्षिति धन दाना ॥ एहसुनि त्रिय निज भवन सिधाई ॥ द्विजहु आपनी बिदा कराई ॥ शीघ्र जाय नब त्रिय सन बोला ॥ लेहु नारि क्षिति धन अन मोला ॥ निज पति सहित राज्य तुम करहू ॥ और बात जिन मन महँ धरहू ॥ यह सुनि बोली त्रिय करि क्रोधा ॥ रे दुष्ट विप्र गन बोधा॥ पिय पद छाँड़ि न और सोहाई ॥ करौ कहा रूपनि प्रभुनाई ॥ धृग क्षिति धन जन कुल परिवारा ॥ मोहिं एक पति चरण अधारा॥ करौं एक निज पति कै सेवा ॥ सपनेहु सुमिरौं नहिं परदेवा ॥ पिय आज्ञा जल मम मन मीना ॥ बसै सदा द्विज पर्म प्रबीना ॥ धर्म ब्रत और वेद पुराना ॥ सो सब पिया बचन हम जाना॥ ससुर सासु पितु मातु जो आना ॥ पिय रुख लखि इन्ह हूँ सन नाना ॥ ६॥ दोहा ॥ करौं लोभ मन तनिक जो होय धर्म के नास ॥ दीन दुकूल उतारि कै जाहु ब्राह्मनी पास॥ ७॥ चौपाई ॥ कहेउ पिया यह द्विज व्योहार

अब सोइ सुनहु जो चरपनि बिचारा ।। राज सो पण्डित सकल बोलाये ।। करि बिनती अस पूछन भाये ।। कन्या बिक्रि पाप जस होई ।। कहहु बिग्यानि राखो गोई ।। ताकर भेद कहहु समुझाई ।। यह सुनि बोले पण्डित राई ।। सुनहु चरपनि जो बिस्वा आहीं ।। तासु नात कन्या धन खाहीं ।। ताकहं होय महा अघ भारी ।। अपर कहै को हेतु बिचारी ।। चर्मकार अरु डोम कसाई ।। इन कर छुवा अन्न बरु खाई ।। कन्या बिक्रिय करै जो प्रानी ।। ताकर छुवा अन्न अघ खानी ।। नन्या बिक्रि करै नर जोई ।। महा अघोर नरक परु सोई ।। इहु छत्री धन पत्र बिहूना ।। तासम बलछी मुन्न सोदूना ।। गड़ी रहै तहं धार भराई ।। तासु कुंड भरि अगिनि धधाई ।। कन्या बिक्रिय मूढ़ जो करहीं ।। ताकहं बांधि धार पर धरहीं ।। मुनय पार जब बपु महर कीन्हे ।। तब उठाय लस्सी धरि लीन्हे ।। मरै न जीव कष्ट बहु होई ।। कल्प कोटि दुख भुगतै सोई ।। ८ ।। दोहा ।। नारि पति ब्रत होय कुल की कोइ हरि को दास ।। तबहिं जीव काढ़ नरक तें बसहिं हरषि हरि पास ।। ९ ।। चौपाई ।। यह बिधि पण्डित कहेउ बिचारी ।। नर्क उद्धारन पतिब्रत धारी ।। जेहि घर नारि पति ब्रत होई ।। तेहि कुल नर्क परै नहि कोई ।। को पिर हरि जन तेहि कुल माहीं ।। यह बिकार जेहि सपनेहुं नाहीं ।। हरि के संग सदा जिन राते ।। प्रेम लक्षना जै मतिमाते ।। ऐसे पुत्र जो कुल महं जाइहि ।। तासु पितर सब हरि पद पाइहि ।। यह बिचारि जे सुबुध सयाने ।। यही धर्म जिन उनम जाने ।। १० ।। दोहा ।। तबमैं कहेउं कना

सन द्रव्य जगत कर सेनु ॥ पनि देवन नहिं लीन्ह सो कहु-
हु कवन लखिव हेनु ॥ ११॥ छंद ॥ हेनु कवनि बिचारि
पिय जेहि लीन द्रव्य च अंगना ॥ जेहि बस सुरा सुर नाग
नर तेहि किमि कियो थिय लंघना ॥ अस कौन जग में धी-
रज्ञानी करै द्रव्य को संगना ॥ तेहि मलहु ने करि अति
अपावन सो बुझायेउ ब्रह्मना ॥ १२॥ दोहा ॥ एहस-
मझावहु मोहि पिय जेहि ते मिटै भ्रम चिन ॥ देव भेव
में सब लखा तुमस समान नहिं मित्त ॥ १३॥ चौपाई ॥
सुनहु पिया यह चरित सोहावा ॥ जासु प्रभाव सकल
जग छावा ॥ सनहंस एक इच्छा कीन्हा ॥ अहुन ज्यो-
ति हृदय मो लीन्हा ॥ बहुन श्याम होय बाहेर आई ॥
तहं निर्जनी जोगि दरसाई ॥ इनउन चितव देखु कोउ ना-
हीं ॥ तब बिसमै मानेसि मन माहीं ॥ नेत्र मूंद तेइ ध्या-
न लगावा ॥ परमहंस तब दरशन देखावा ॥ कोटि सूर्य्य स-
म लखिव द्युति भारी ॥ छकित भई तब आदि कुमारी ॥
पनि जोरि तेहि बिनय सुनाई ॥ एक पुरुष मोहि देहु गो-
साँई ॥ अलख पुरुष तब कीन्ह बिचारा ॥ मन ते प्रगट
कीन निरंकारा ॥ १४॥ दोहा ॥ निरंकार के चरण पर
जब चित दीन्हे बाम ॥ तबने प्रगट निरंजन सिद्ध भये सब
काम ॥ १५॥ चौपाई ॥ देखि निरंजन त्रियहि लो भाना ॥
नाकर नुरत हाथ झलकाना ॥ कर महं देखि चिन्ह ओंका-
रा ॥ तबहिं नारि मन कीन्ह बिचारा ॥ अक्षर नीनि नीनि
गुन देखा ॥ प्रगट भये सुन तीनि बिशेखा ॥ देखि अकार
उकार मकारा ॥ अजहरि पिव तेहि नाम बिचारा ॥ तेहि
लखि बहुरि निरंजन राई ॥ परमहंस सो गये समाई ॥
तब त्रिय बहुरि तपहि मन कीन्हा ॥ तुरतहि परमहंस वर

दीन्हा ।। नारि पुरुष कर करु बहु रूपा ॥ तहाँ बसव होइ प्राब्द स्वरूपा ।। चारिखान करि जगबिस्तारा ॥ नाकर बन्धन कहौ बिचारा ।। नारिहि बांधि लोभ की फासा ।। द्रव्य शृंगार पुत्र बहु आसा ।। पुरुष न बांधु नारि के रूपा ॥ जेहि करि परा है भव कूपा ॥ निरमल अंस मोर अवलेहू नासहु नुव कछु युक्ति करेहू ॥ प्रकृति पचीस करहु गुन खानी ॥ जा बश जीव रहै सुरव मानी ॥ पांच तत्व करि पिंड बनावो ॥ पंची कृत तेहि मांहि लगावो ॥ नामहं दशद्वाजे कीजे ॥ बियद देव सबजी तेहि दीजे ॥ परम अमी यह अंस हमारा ॥ एहि सम मोहिं कहं कोउ न प्यारा ॥ अंस नारि पुरुष सुनु माया ॥ तेहि बंधन मैं तोहि बताया ॥ १६ ॥ दोहा ॥ ब्रह्म जीव द्वै रूप है करिहौं खेल अनन्त ॥ नारि पुर्द कहवाइहौं खेल परिडत बुधसन्त ॥ १७ ॥ होय के चिय जब पिय लपव पुरुष होय निज रूप ॥ नबहिं अंस मोहिं मह मिलै फिरै नपरै भव कूप ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ सुनहु नारि नुव खेल जो करिहौं ॥ सब मह प्राब्द रूप धरि रहिहौं ॥ अब सोइ प्राब्द भेद परवीना ॥ जो सुनि होय सकल अघ छीना ॥ रेफ सो पार ब्रह्म निरमाया ॥ सहित अकार सनबिद्या माया ॥ दूनो करि संयोग बरवानी ॥ भयो जीव आतम सुरव खानी ॥ आतम बिद्या ब्रह्म संयोगा ॥ ईश्वर प्रगट भये सुरव भोगा ॥ सोइ ईश्वर जड़ माया कीन्ही ॥ सोइ लडार जीव पर दीन्ही ॥ पार ब्रह्म नव मंच बिचारा ॥ नामु मुक्ति हि नरचेउ मकारा ॥ नवदुइ संपुट रचेउ बनाई ॥ सोइ सुनहु जिय मन लाई ॥ सो महं मति रकार धरि दीना ॥ हंमह बसन मकार प्रवीना ॥ दोउ संपुट मह पवन समाई ॥ सो अधार करि जीव सहाई ॥ सोहं

जाप जपै जो ज्ञानी ॥ बर्ष प्रयन्त एक मनि दानी ॥ तब मन अंडै सिद्धा पावै ॥ अहनिसि प्रीजो यह सुरति लगावै ॥ ऊलटि जाप सुमिरै षट सासा ॥ बिनु प्रयास होय आतम भासा ॥ हंसहजपै एक मति कोई ॥ मास एक महं अनुभव होई ॥ यह मैं कहेउ नीनिबिधि जोई ॥ योग सिद्ध कहैं अजपा सोई ॥ अब सतन कर भावों ध्याना ॥ जेहि प्रसाद कछु मोहु न जाना ॥ सोहं मध्य सुमिरु जो नामा ॥ सहसहि सिद्ध होय सब कामा ॥ १६ ॥ दोहा ॥ सकल सृष्टि को भेद है सब ध्यानन कर पीउ ॥ राम नाम लखु स्वास में तब सुख पावै जीउ ॥ २० ॥ क्षर अक्षर येहि महं लखै अपर निरक्षर भेद ॥ नाहू ते कछु अपर यह जाहि न जानत वेद ॥ २१ ॥ सोरठा ॥ सहं अकार पुनि रेफ अहै निरक्षर ब्रह्म सो ॥ अक्षर महं कछु फेर दीर्घ अकार सोजीव है ॥ २२ ॥ दोहा ॥ क्षर मकार प्रिय देह सोहू मोक्ष बन्ध कर मूल ॥ एहि कर नाता नेह जो सो अकाश कर फूल ॥ २३ ॥ चौपाई ॥ ताकर भेद अचल अपि जोई ॥ चतुर सन्त लखि वेहि एहि कोई ॥ लखतहि प्राप्त सिद्धता पावै ॥ मुक्ति रूप है जग सुख पावै ॥ पुन्य पाप छूटै मन काला ॥ सुख के सिन्धु विहरु सब काला ॥ अमित जन्म कर अघ मिटि जाई ॥ जास जपत चिन्ता मन पाई ॥ ज्ञान धाम सकार प्रिय आही ॥ अमी मकार मुक्ति तेहि साही ॥ सो सकार है ब्रह्म प्रकासा ॥ हं मकार माया कर बासा ॥ जब भीतर कहं स्वास जावै ॥ तब रकार कर ध्यान लगावै ॥ बाहेर होत कि सुनै मकारा ॥ यहि नाम सतगुरु सुनि सारा ॥ रामनाम जपु स्वासा संगा न छोड़ै वै काया कर संगा ॥ रामनाम स्वासा धुनि लावै ॥ तब अनुभव सब

रूप देखावै ॥ देखै सात स्वर्ग ब्रह्मंडा ॥ देखै काया खेल अखंडा ॥ नव खट चक्र आपु दरशावै ॥ अनहद शब्द सुनत सुख पावै ॥ सहज समाधि लाय करु ध्याना ॥ नख शिख रूप जो आनसमाना ॥ आनसमान नेरूप विशेषी ॥ देखि परै जेहि योगिन देखी ॥ २४ ॥ दोहा ॥ जो प्रभु हृदय निरोह अज बिनु प्रयास दरशाय ॥ हर्ष दीन सो कंत महिं आनंद उर न समाय ॥ २५ ॥ चौपाई ॥ जो धरि ध्यान एक मन लावै ॥ आठसिद्ध तेहि चंवर डुलावै ॥ यह नो ध्यान संत कर भयऊ ॥ सुनहु प्रिया नारिहु कर पूवन ॥ नारि पुरुष जो कोई ध्यावै ॥ सो कल्यान चारि फल पावै ॥ जेहि कहं गाढ़ परै अति भारी ॥ यही ध्यान नेप्रगट गुरारी ॥ दुःख दारिद्र निकट नहिं आवै ॥ आठसिद्ध की चाह मिटावै ॥ जो मन थापि के सुरति लगावै ॥ सिद्ध होय मन वांछित पावै ॥ नारिन को पतिव्रत करावै ॥ पुरुषन को अपवर्ग बसावै ॥ यहनें प्रिया सुनहु मन लाई ॥ जपहु नाम संतन सुख दाई ॥ दिन औ रात्रि प्राप्त यह होई ॥ बिनु गुरु ज्ञान लखै नहिं कोई ॥ जो कोइ भेद शब्द का पावै ॥ मुक्ति रूप ह्वै जग मुक्तावै ॥ प्रभु नाम यहि सहि सुनावा ॥ शुकाचार्य्य कहं जनक लखावा ॥ मोहि सन कंत भाखि यह बैना ॥ फिर बोले मन कहं करिचैना ॥ २६ ॥ दोहा ॥ यह मैं तोहि सुनायेउ शब्द ब्रह्म सुनु नारि ॥ अब पूछो सो कहौं मैं श्रुति सिद्धांत विचारि ॥ २७ ॥ चौपाई ॥ धन्य धन्य तुव कंत गुसाईं ॥ परम तत्व मोहि दिहेउ लखाई ॥ सतगुरु मार नाव पद रज राना ॥ औरहु एक बनावहु बाना ॥ कहहु कवन जीवन सुख कारी ॥ को दुख देइ मूढ़ अविचारी ॥ कबहुं के सुख

चित होय जावै ।। कबहीं मन संदेह बढ़ावै ॥ यह ब्योरा सब देव बनाई ।। पूछौं गुरु चरणन सिर नाई ।। धन्य धन्य है मनि प्रिय मोरी ।। अबही सुरति भाये कछु मोरी ॥ जबहिं अन्न सिव मा यहि दीन्हा ।। तेहि सुख लागि यतन बहु कीन्हा ।। सुनहु प्रिया सोइ प्रश्न तेहि बारा ।। क्षमा दया संतोष बिचारा ।। बोध प्राप्ति तपज्ञान बिवेका ।। योग बिराग धर्म सत नेका ।। अरु बिज्ञान सील परिवारा कहौं कहां लगि बहु बिस्तारा ।। ये बंधन सब छोड़वे लायक ।। कामादिक इनके दुखदायक ।। पांचउ बांधेउ बली प्रबीना ।। माया तिन्हे भजा बहु दीना ।। तेहि ते तिन्हे अहै बड़ जोरा ॥ मानहु सत्य बचन प्रिय मोरा ।। यह सब मन पासिनि कर जाना ।। तेहि तें धन कर करु अपमाना ।। सुनहु प्रिया पति बन अस आहीं ।। को असि बस्तु जानु जेहि नाहीं ।। जो त्रिय पिय पद सुरति लगावै ।। अनुभव होय परमपद पावै ।। २८ ।। दोहा ।। पूरुब स्वामी मारति के पन्थल सो गति लेहिं ।। त्रिया न क्यों गति पावही जो पति भजे सदेहिं ।। २९ ।। छन्द ।। संदेह पिय पदसुरति लावै अमित सुख भोगै सही ।। तेहि सुयप्रा हरिहर ब्रह्म गावै भागवन्ती सो सही ॥ लोभ मोह न मान मद तेहि जित पदारथ यह गही ।। सहज भाव सुशील नय पुरुष परम पद सो त्रिय लही ।। ३० ।। सोरठा ।। करै कंत सन प्रीति योग भोग काढ़ गर यह ।। तेहि न भजै अनरीति अनि अधर्म क्यों कवि कहै ।। ३१ ।। इति श्री मद्दमल नरेश श्री महाराजाधिराज श्री रामचन्द्र पद पद्म लुब्ध मधुप भ्रमर सिंह सुत साहेब दीन तस्य कृति बिरचितायां सती बिलासे सारत्य शास्त्र मते शब्द ब्रह्म ज्ञान देप्रा तरंगे तो नाम चतुर्थो विलासः ४ ।

॥ दोहा ॥ सुनेहु ज्ञान विज्ञान मत ध्यान योग मत सार ॥
अजपा भव जल तरन को रघुवर नाम अधार ॥ १ ॥ चौ-
पाई ॥ यह मत गूढ़ संत कोउ जानै ॥ सोइ नहिं फिरै भव पर-
हि सयानै ॥ सो पति सहजहि मोहि बतावा ॥ मैं पिय सा-
धु संग फल पावा ॥ भानु कोटि सत साधु प्रकासी ॥
जासु बचन कर अघ तम नासी ॥ कोटि चन्द सम सी-
तल कारी ॥ किरिन बचन त्रैताप निवारी ॥ कोटि मेघ
सम संत बिचारे ॥ अंबु सुयपा हरि बरषन हारे ॥ सहन
सील छिति सत सम साधू ॥ विस्नु कोटि सत सम हर बा-
धू ॥ कोटि प्रभु सम दाना अहई ॥ कर्म कु अंक मे-
टि अघ दहई ॥ साधु कि महिमा किमि कहि जाही ॥
राम कृपा बरनत सकुचाही ॥ सोइ साधना कंत मुख पाहीं
॥ तेहि ते नहिं दुराव मन माहीं ॥ लच्छना रूप सील गु-
न पूरे ॥ अमित तेज बल अति रत सूरे ॥ भक्ति हीन
नहिं सोभा पावै ॥ जिमि उजारि किंसुक भरि जावै ॥
निरधिन मलिन कुरूप भयावन ॥ अय सब सत्त सन्त
मन भावन ॥ २ ॥ दोहा ॥ सन्त मिलन सम सुख नहीं
तिथि हरि हर पद पाय ॥ अमित जन्म के अघ हरन
आपन बोल सुनाय ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ पिय सन सन्त सु-
यपा दूमि जाई ॥ फिर मैं बिनय कीहेउँ सिर नाई ॥ नाथ
सीस बिनवौं कर जोरी ॥ हे पिय सु[illegible] करहु मति मोरी
फिर कछु कथा कहहु अघ मोचनि ॥ पापिउ तरै जाहि
के सोचनि ॥ सुनि मम बिनय कहेउ मन भावन ॥
कथा बिमल अघ ओघ नसावन ॥ एक समय की[illegible]
सुनि प्रिय बानी ॥ मथुरा जन्मे सारँग पानी ॥ परगो लो
कउतरि छिति आवा ॥ कोउ कोउ यह चरित्र लखि पावा

नहु बिधि केल कीज जस्द लाला ॥ गोप वधू सब फिरहिं बेहाला ॥ दुष्ट नाप्पा करि जन सुख दीन्हा ॥ नव तिहकंट केल पभु कीन्हा ॥ नाथेउ नागेउ नचाइ मुरारी ॥ बुइबुइ गोपि एक बनवारी ॥ करसो करहि धरे आनि प्रीती ॥ नाचहिं ब्रज मोहन यह रीती ॥४॥ दोहा ॥ सुरी आसुरी पन्नगी नारि यक्ष गन्धर्ब ॥ बरी नयन के चिनहरी सुरली बसि भइ सर्व ॥ ५॥ चक्र भूमि गै दसहुँ दिपि पूरुष सकहिं न आय ॥ जो समरथ्थी सिद्ध जन नारि बेय तहं जाय ॥६॥ चौपाई ॥ नव पिव बेय सनी कर लीना ॥ दम्पति जुत आये परबीना ॥ आये काम छबीलि साथा ॥ नारि बेय सब नायो माथा ॥ थकेउ इन्दु रबि रथ सुधि भूले ॥ भै बर मासु रैन रस फूले ॥ ढोल मृदंग झांझ डफ बाजे ॥ सब बिध सकल अभूषन साजे ॥ मुख पर मुख दै नोरहिं नाना ॥ नन्द कुंवर गावहिं कल गाना ॥ नव मोहनी तान हरि टेरा ॥ तीनि लोक धुनि भरो घनेरा ॥ बन्शी धुनि सुनि सुर मुनि मोहे ॥ नन मुख हवि सकल पशु जोहे ॥ ब्रज की बधू सकल नव धाया ॥ जो पतिव्रता बचन मन काया ॥ सोवत पतिहि दीन्ह तिन त्यागी ॥ जाय कृस्न के चरणन लागी ॥ नव हरि कहेउ सुनहुरे बामा ॥ पति बिमुखिन कर इहाँ न कामा ॥७॥ दोहा ॥ त्रियन कहा आस बिहँसि नव सब के पति यदुनाथ ॥ जब लगि अग्नी न पाइबे नव लगि पीवत पाथ ॥८॥ चौपाई ॥ तब पी कृस्न कहा शुनि रीती ॥ भावो तिनि सुनहु करि प्रीती ॥ जो पति होय त्रियन कर कोई ॥ मोहिं तें अधिक जानि ये सोई ॥ जो मोहिं तें त्रिय पति कम जानै ॥ सो तेहि होय नर्क नहिं आनै ॥ मोहिं पूजै त्रिय मुक्ति न पावै ॥ अन्तस कल

मोहि नहिं भावै ॥ जो मोहिं पूजै चित्त करि प्रीती ॥ रक्षा क
रौं मोरि यह रीती ॥ मैं निज बाना की पति राखौं ॥ सत्य
कहौं मुख असत न भाखौं ॥ चित परलोक शुद्ध नहिं होई
ई ॥ बिनु चित सुगति देइ नहिं कोई ॥ किंचित पति न-
जि तपु मन लावै ॥ अन्त काल बैकुण्ठ सिधावै ॥ पुन्य
क्षीन जन्मै भूतलोका ॥ उत्तम कुल पावै पति सोका ॥
कोटि बिप्र बध कहँ गति देई ॥ पति बिमुखी चित संग न
लेई ॥ पति बिमुखिहि जो देखै नैना ॥ नौ मोहिं पाप
होय पिक बैना ॥ पति बिमुखी जो मन मुख आवै ॥ मोरे
अंग नाप सो छावै ॥ पति बिमुखी जो नावै सीसा ॥ तेहि
अघ लेपै जदपि जगदीसा ॥ ६ ॥ दोहा ॥ तब बोली अ-
बला सकल जोड़ि रिपु होय करजोरि ॥ को पति भयो क-
हाँ तक कहे बिनय सुनिमोरि ॥ चौपाई ॥ तब श्री कृष्ण
कहा अस बानी ॥ अलख पुरुष है पति अज्ञानी ॥ गुरु औ
पुर्ष ए पद भगवाना ॥ इन तजि सुगति देइ को आना ॥
इन तजि बिभव न प्रभुता होई ॥ इन तजि सुगति देइ न-
हिं कोई ॥ इन तजि मोहि न पावहिं प्रानी ॥ कोटि जन्म
तप करहिं सयानी ॥ इन्हहि प्रसन्न करै जो कोई ॥ संग
फिरौं मैं अनुचर होई ॥ अब सुन अबलहु एक इतिहासा
जो सुनि तुम्हे परै बिसवासा ॥ भयेउ जलंधर निरधर
एका ॥ नहिं सद असद को करै बिबेका ॥ तेहि जब रा-
ज्य भयो अति भारी ॥ सुर पुर लेंदिये सुरन निकारी ॥
हारे सुर करि बिबिधि लड़ाई ॥ तब गिरि कंदर चले पराई
॥ पुनि आवर्ति समर तिन कीन्हा ॥ भये जब शत्रुन हा-
रि सुर लीन्हा ॥ १२ ॥ दोहा ॥ लगे जपन तब प्रेम करहिं ब्र-
ह्मादिक सुर सर्व ॥ भये प्रसन्न तब चन्द्र धर प्रबल करन

जोरी ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ तबशिव ध्यान खोलि अस भाषा ॥ कहहु देव आपन अभिलाषा ॥ तब देवन सबहेतु सुनाये ॥ सुनत महादेव रणी बजाये ॥ नाद सुनत भये फौज तयारी ॥ हरहु आपनो वृषभ सवारी ॥ कुंडल कानन पहिरेउ व्याला ॥ चन्द्र लिलाट बाँधि करि छाला ॥ गहि कर त्रोन त्रिशूल सुधारी ॥ चले बसह चढ़ि तब त्रिपुरारी ॥ समर भूमि शिव गड़ा निशाना ॥ चमकै ध्वज पताक फहराना ॥ सुधिसुनि तहाँ जलंधर आवा ॥ सीस नाइ ईशहि समुझावा ॥ शिव कह और बात नहिं बूझी ॥ नैं सठ करेसि मोहि सन जूझी ॥ इतना सुनि सो गर्ज अपारा ॥ जुड़े निशाचर बीर जुझारा ॥ बिबिधि भाँति शिव कीन्ह लड़ाई ॥ तेहि नहिं ननिक घाव छुड़ जाई ॥ तब शिव कीन्ह विष्णु कर ध्याना ॥ प्रगट भई मूरति कल्याना ॥ १४ ॥ दोहा ॥ तबशिव कहेउ विष्णुसन किमि यह मृत्यु न होय ॥ जेहिविधि मरै निशाचर नाश बना बहु सोय ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ तबहरि कहा मृत्यु यहि नाहीं ॥ यहिकेहै पतिब्रत घरमाहीं ॥ महा पतिब्रत यहि की नारी ॥ यहि जीते को रनहिं प्रचारी ॥ त्रिय करहै पति रूपर ध्याना ॥ यहि सन जीतु सुभट को आना ॥ सखिन मध्य करि कथा सुनावै ॥ निज पति ध्यान तेंपनिह लगावै ॥ यहि नारि सत प्रबल पुरारी ॥ हमहूँ समुझि गये हिय हारी ॥ जेहि के नारि पतिब्रत होई ॥ तेहि रन जीत सकै नहिं कोई ॥ १६ ॥ दोहा ॥ मनसा वाचा कर्मना नारि पति ब्रत होइ ॥ तेहि कर जो सुमिरन करै जीत परन होइ ॥ १७ ॥ चौपाई ॥ इतना सुनि हरषी मुखबानी छकित भयो अपारगति जानी ॥ तब शिव कहा वर्ण तुम रारहु ॥ कृपासिन्धु सुर दुःख निवारहु ॥ वासुदेव तब कहि

गोहराई ॥ तेहि कोपे मोहि कवन सहाई ॥ पति व्रत नारि भजो दिन रानी ॥ तेहिते नाहिं बिये सनि सानी ॥ नव प्रिय कहे विनेघ तुव नासा ॥ दारुह बर्न सुरत्न के कामा ॥ परस्वारथ जाके नहिं भावा ॥ सोजग जन्मि कौन फल पावा ॥ नवहरि कहा करहु तुहमारी ॥ अबहमजायदेव ब्रतटारी ॥ नवधरि रूपजल्लन्धर केरा ॥ कामबिवस होइ बृंदहिटेरा ॥ १८॥ दोहा ॥ देहुप्रिया रति दान मोहि जनि कछु करहु बिबेक ॥ यहि सुनि बिलस नकी हेउ भैरस बस नन एक ॥ १९॥ चौपाई ॥ तेहि सुरागगेउ सीस नेआगे ॥ धर भुज पसी बिलम्ब नलागे ॥ हरि नव भगे सोकर धरि रोका ॥ कोहसि चोर ठगेनैं मोका ॥ नव हरि कहेउ जगत कर कर्ना ॥ मैं हौं सकल सृष्टि कर भर्ना ॥ अब प्रिय चलु बैकुण्ठ निवासा ॥ दंपति जुग करु भोग बिलासा ॥ नव तेहि कह धृग स्वर्ग निवासा ॥ छूटेउ सत्य लोक कर बासा ॥ अब मम आप लेहु कर रोषी ॥ मन गुन बोली बचन सकोपी ॥ होहु परा छत हुस महिपाला ॥ नारि हरी बन फिरहु बेहाला ॥ इतना सुनि हरि कंपित गाना ॥ नव अकास सत भै अस बाना ॥ चिन्ता करहु न नर बपु कारन ॥ मैं अवतरब सो नर बपु धारन ॥ तुव गुन सर्व सो गुन आधा ॥ चौथे भाग तम गुन बल साधा ॥ आदि ज्योति निरंजनी कुमारी ॥ सो अवतरहि मोर होइ नारी ॥ २०॥ दोहा ॥ कमला कर सो रूप लै गिरिजा बानी प्रगति ॥ करहि काज अनुहरि नजग हृदय धरिव मम भक्ति ॥ २१॥ चौपाई ॥ सुनु सुनन करसि हुकुम यहि केरा ॥ यह पनि व्रता अंगहै मेरा ॥ नबहरि बोले बचन रसाला ॥ अब मोहिं कर रजाय जसवाला ॥ नव नेउ कहा इवञ्चिना बनाऊं ॥ पनि लैके मैं नापर जाऊं ॥

यह सुनि बिस्नु बिलंब न कीन्हा ॥ दाह क्रिया करि भै रस लीन्हा ॥ चिता भस्म तब अंग लगावा ॥ शारद तबहिं तुरित बुलवावा ॥ समरी येक भई तेहि काला ॥ हरि पुनि छार मलेउ निज भाला ॥ तब सो पारबती अंग धोवा ॥ अमरोदिव छार सुरव सोवा ॥ तब लक्ष्मी लरिव हरिहि बेहाला ॥ प्रेम नीर नहवायो बाला ॥ तासन तुलसी भई सुहावन ॥ कृष्ण रूप सबजग पर पावन ॥ तब अकाया सन फिरि भइ बाना ॥ अब यह धरहु सीस पर नाना ॥ यहि लै सुन जेपू जेहि तोही ॥ अति प्रसन्न जन तुकीन्हेसि मोही ॥ सार भाग वृन्दा यहि माहीं ॥ यह सेवन कछु दुर्लभ नाहीं ॥ होहु अनंद तबसीस चढ़ावा ॥ देवन जैजे प्रारब्द सुनावा ॥ सुनहु नारि तोहि दिन कर बाना ॥ जस बरदान दीन्ह जग नाना ॥ २२ ॥ ॥ छप्पै ॥ जबहिं जलन्धर नारि बिस्नु आपन त्रिय कीन्हे ॥ तबहिं नाहि बरदान अचल हरिहर मिलि दीन्हे ॥ पिय पद भजहि जो नारि नाहि की रक्षा करिहौं ॥ अह निसि रहौं हजूर सकल आयसु सिर धरिहौं ॥ सती सेवकरिहौं अचल अपर रक्षक कह बाढ़ौं ॥ ताके कुल केपि नर जो तेहि गो लोक बसाढ़ौं ॥ २३ ॥ सवैया ॥ बिस्नु बोलाढ़ु लिये यमराज को नाहि दृढ़ाय दुहै सिख दीन्हे ॥ रक्षक मैं हौं पतिब्रत को परिवार समेत दुहै प्रण कीन्हे ॥ ताने सकान रहेउ मन माहं तुकाहू को दंड न दीन्हे बेचीन्हे ॥ जो त्रिय कन्त भजै करि प्रेम तुताहि के नगर किंकर न लीन्हे ॥ ॥ २४ ॥ छप्पै ॥ छूटत अघ क्षण माहिं जबै तिय पिय पद लागत ॥ जुड़त पुन्य की सीव भाग्य पुर्बुल कर जागत ॥ तासु तेज उद्दंड देखि रवि पापी दुमि लाजत ॥ ब्रह्मा बिस्नु महेश्वा नाहि निज निज रथ साजत ॥ बहु अनंद गो लोक महं

यह आवै मम धाम कब ॥ सत्यलोक पतिव्रत गई सकल रहे पछताय सब ॥ २५ ॥ दोहा ॥ योग ध्यान जप तप सकल तीर्थ नेम व्रत जाग ॥ यहि ते त्रिय नहिं गति लहै बिनु पिय पद अनुराग ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ यहि नेक हौ सुनहु सब नारी ॥ पति सेवहु सब आस बिसारी ॥ अपर सुनहु यह अद्भुत बाता ॥ एक नारि पति पूर्व मन राता ॥ तासु पूर्व बहु भ्रम करि आवा ॥ सून पलंग पर आनि सुख पावा ॥ तासु अंग त्रिय अगाध बासी ॥ तदपि न मोरत जाग सयानी ॥ लै कर बिजन करै बयारी ॥ परेउ तासु सुत अगिनि मँझारी ॥ अचल धर्म वहि आपुन पाला ॥ देखत रही उठी नहिं बाला ॥ अगिनि पतीव्रत को सुत जानी ॥ सीतल भई तासु डर मानी ॥ तुमहु पूजि पति करहु अनन्दा ॥ जानहु मन क्रम बालगोविन्दा ॥ पति आज्ञा लै जब फिरि आवहु ॥ मोहि सत्य अभै भक्ति बर पावहु ॥ यह सुनि तिन्ह बिलंब नहिं कीन्हा ॥ पति के चरण जाइ चित दीन्हा ॥ हाथ जोरि अस्तुति अनुसारा ॥ हम जैबे जहँ नन्द कुमारा ॥ निज निज पति आज्ञा लै बाला ॥ तबफिर जाइ मिली नन्द लाला ॥ २७ ॥ छन्द ॥ नँदलाल मिलन बेहाल त्रिय तब छूटि लज्जा देह की ॥ जिमि कनक बेलि मिलु नमालहि नहिं सकुच कुल गेह की ॥ मनो भंवर संग रस रचि बधूटी बीर गति लखि नेह की ॥ श्याम तन घन नड़ित त्रिय गति मनहु भै रस मेह की ॥ २८ ॥ त्रिभंगी छन्द ॥ क्रीड़हि रस क्रीड़ा तजि कुल व्रीडा पीड़ा बिकुरन पावहिं ॥ परम नरंगिनि मोहन संगिनि रंगिनि रस स्वर गावहिं ॥ उर बन माले दुष्ट न साले बाले सगरि रिझावहिं ॥ जे यहि गावहिं हरि पद पावहिं

भव जल बहुरि न आवहिं ॥ २६ ॥ दोहा ॥ कहेउ प्रिया हरि सुख बचन
जो सुनिहैं नरनारि ॥ सो पैहैं सुख जगत महँ अंत तरहिं भव बारि ॥
३० ॥ इति श्री महिमल नरे श्री महाराजाधिराज श्री रामचंद्र कृपा पा
त्राधिकारी अमर सिंह सुत साहेब दीन नस्य नारि बिरचि ना
यां सती बिलासे श्री भागवत मते गोपी उपदेशो बर्णनो नो ना-
म पंचमो बिलासः ॥ ५ ॥ दोहा ॥ अमर सिंह सुत भावि
यहु भयेउ भक्ति रस लीन्ह ॥ बोले बहुरि दयाल होइ जब
मैं अस्तुति कीन्ह ॥ १ ॥ सुनहु प्रिया लीला रुचिर सत्यावनि
करहेनु ॥ अक्रम मेटो कन्त कर रचेसि धर्म करसेनु ॥ २ ॥
॥ चौपाई ॥ सत्यावनि को कन्त मलीना ॥ अंग भंग दुर्ब-
ल अति दीना ॥ रामचरण है नाकर नामा ॥ अधम म-
लीन अशुभ कर धामा ॥ पुर्वहि बध संन्यासी कीन्हे-
सि ॥ मरनी बार आप नेहि दीन्हेसि ॥ तै सतजन्म कुष्ट
कर भोगा ॥ मरसि अकाल रहसि बस रोगा ॥ यह सुनि
कै भै कंपित अंगा ॥ खोजत फिरे साधु सत संगा ॥ कोइ
असाधु अस नाहि लखावा ॥ तब नेहि पार बती पद ध्यावा
॥ भइ प्रसन्न जब आदि कुमारी ॥ मांगेसि तबहि प-
ति व्रत नारी ॥ एवमस्तु भइ गिरा सुहाई ॥ दूसरे जन्म
नारि सो पाई ॥ सोइ सत्यावनि सुबुध सयानी ॥ पति
सेवै गुनि सारंग पानी ॥ एक बार निरिप्रा अर्द्ध सिरानी
॥ नदुवा नाल दीन मृदु बानी ॥ सुनत नाल निन्ह इच्छा
कीन्ह ॥ सत्यावनी काध धरि लीन्हा ॥ ३ ॥ दोहा ॥ महा
भयंकर राति अति सूझि परै नहि पाथ ॥ द्विज भूलत यक
अधो मुख जुटे माथ सत माथ ॥ चौपाई ॥ आप दीन्ह द्विज
विनहि बिचारा ॥ रंडा होसि होत भिनुसारा ॥ तब सत्याव-
नि कीन्ह गुसाना ॥ मम धर्म तेजनि होइ बिहाना ॥ सो

बहु काल सूर्य्य रथ अरेऊ ॥ सुर नर मुनि सब दुख सन भरेऊ ॥ ब्रह्मा बिष्णु महादेव आये ॥ सन्नावति सन्त बिनय सुनाये ॥ तब सन्नावत कहि अस बाता ॥ अँतु सुइया लगि चलिये ताता ॥ हँसि सुर सकल त्रियहि सँग लीन्हे ॥ अनुसुइया चरणान चित दीन्हे ॥ कह अनुसुया बैठु सुख गोई ॥ पति देवन किमि छाडा होई ॥ जो बर सकल देहु यहि आना ॥ तौ निश्चै फिरि होइ बिहाना ॥ तब सुर बोलि उठे कर जोरे ॥ मातु तुम्हार हुकुम सिर मोरे ॥ ४ ॥ दोहा ॥ अनुसुइया कह बिहँसि तब कहैमानिसब लेहु ॥ आयू रूप बिशेष ते आपन आपन देहु ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ तब सन्नावति पति कै काया ॥ देवन नई कल्पि निरमाया ॥ युग पर्य्यन्त अमर तेइ कीन्हा ॥ कुष्टी के सुबरन तन दीन्हा ॥ सन्नावति पतिसंग बिहारा ॥ लगी करन सेा बिबिधि प्रकारा ॥ पुत्त रिहि पलक बचावै जैसे ॥ नारि धर्म पति रक्षन तैसे ॥ धर्म अधर्म पाचत्रिय अहई ॥ उत्तम मध्यम बुध अस कहई ॥ बिगै अ परलोक बरु बाता ॥ नारि पतीब्रत देहि बिधाता ॥ तब मैं कहेउँ प्राणपति पाही ॥ तप समान कछु दूसर नाही ॥ तन धन धाम धरनि सुत दारा ॥ तप करि बाढ़न बिबिधि प्रकारा ॥ ६ ॥ दोहा ॥ सुनहु कन्त तिन तप किया नेहि कुछ दुर्ल्लभ नाहि ॥ सेा अधर्म के होनहीं सकल नापुा होइ जाहि ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ यह मम उक्ति सुजत पिय हर्षे ॥ आपन वचन सुमन सम बर्षे ॥ सुनहु प्रिया तप चरित सुहावा ॥ ममता जासु प्रभु श्रुति गावा ॥ एक बिप्र तप महँ मन लावा ॥ बैठ वृक्ष तरि ध्यान दृढ़ावा ॥ अमित काल गनि जागेउ जहिया ॥ पक्षी एक किहेसि मल नहिया ॥

मलहिं निहारि कोध तनजारा॥ चहूं वोर तब निर रवन लागा॥ अंडज एक तजारि महं आवा॥ सोजरि गिरेउ बिलब न पावा॥ जानेउ बिप्र भई नपु पूरी॥ उठेउ गर्ब करि मन महं भूरी॥ एक रटही रटह गै तन काला॥ अजिर बहारनि नेहि कै बाला॥ तपसी कहेउ क्षुधा मोहि आजू॥ तेहि कर जोरि सुनायउ काजू॥ अजिर बहारि देव सन भावा॥ यह सुनि द्विजहि कोध तन छावा॥ बोली नारि बिनय करि नाना॥ जारेहु खगहि बढ़ा अभिमाना॥ सुनहु बिप्र मैखग तनहिं होई॥ नारि अपावन कह सब कोई॥ यह सुनि द्विजहिं तीर अस लागा॥ कोध छूटि मन आर्जव जागा॥ सुनहु बधू जानेहु किमि बाता॥ तेइ कह जाहु जनकपुर ताता॥ रूप बजार के मध्य गवासा॥ जाहु बिप्र तुम उनके पासा॥ सुनत बिप्र सहसा उठि धाये॥ पहुंचे द्वार बिलंब न लाये॥८॥ दोहा॥ देखत तुरित गवास तब लीन्हे ताहि हंकार॥ कहहु हृदय के हेन सब जेहि लगि भेजेउ नारि॥ ९॥ ब्राह्मन कहेउ नु क्यों लखेउ पाप राशि तुव देह॥ पापी कुल परिवार युत पाप बसत तुव गेह॥ १० ॥ चौपाई॥ कहेउ गवास सुनहु द्विजराया मैं पितु भक्ति बचन मन काया॥ तेहि ते दिव्य दृष्टि है मोरी॥ यह कुल रीति लगी नहिं खोरी॥ निज कुल धर्म करै जो प्रानी॥ नहिं अधर्म नहिं दूषन मानी॥ बसि रटह पंच तीर्थ जो ध्यावै॥ सो तन अछत चारि फल पावै॥ नामु प्रभाव कहौं द्विजराई॥ मन अस्थिर करि सुनु चित लाई॥ नारि पुत्र अरु मातु पितेहू॥ सत्य कहे सर तीरथ वेहू॥ यही पांच सुख सुगति निसानी॥ और तीर्थ सब पाथर पानी॥ मनहि विचारि देखु मुनिज्ञानी

नुव हिन भायेउँ कछु कह कहानी ।। भयेउ जगत दिवज-
बहि नरेपू ।। अति सुरव प्रजहिं न रहेउ कलेपू ।।
दिव रथ चढ़ि देरवे सब लोका ।। लरिव हरिहर बिधि
लोक बिसोका ।। इक दिन नृपति गयो यम धामा ।।
तहँ सज़ाय नहिं दूसर कामा ।। जीवन्त दुरव लरिव तेइ
दुरव पावा ।। तुरत जाय बन ध्यान लगावा ।। सहस
बर्ष रूधी गति स्वासा ।। ब्रह्म गिरा तब भई अकासा ।।
माँगु माँगु दिवजो मन भावा ।। नुव नपु देरिव चोध
मोहि आवा ।। तब कर जोरि कहेउ दिव राजा ।। कापूी
कवन पूभु कर काजा ।। देव बसहिं देवन पुर जाई ।।
मृत्य लोक बसि कवन भलाई ।। ११ ।। दोहा ।। एवम-
स्तु तब गगन भै पूभु गये कैलापू ।। तब दिव प्रजन्त
बोलाय कै सब बिधि दीन्हे बापू ।। १२ ।। मानु पिता सु-
त नारि सन्त जो नहि राखहि हेतु ।। नाकर करिहौं सी-
स हौं हुकुम न मानिहि जेतु ।। १३ ।। चौपाई ।। औरहु
एक बात सुनु अबही ।। सुरव तें झूठ न भायेउ कबहो
।। सत्य छाड़ि सुरव असत जो भाषा ।। तेहि मैं हतब क-
वन सन राखा ।। पालहु सत्य सकल मन लाई ।। सेव-
हु मात पिता घर जाई ।। आन धर्म सुनिहौं जो काना ।।
तेहि मैं हनि हौं काढ़ि कृपाना ।। नृप आज्ञा सुनि कै स-
ब आये ।। जाय धर्म पर नत पर भाये ।। अमिन बर्य यह
भाँति बिनावा ।। जीव सकल अपबर्ग बसावा ।। लक्ष्मी
नवहिं रूप धरि नाना ।। घर घर दहल करत सुरव माना
।। कल्प बृक्ष भेमहीं सोहावनि ।। प्रजहि अनंद देइ
मन भावनि ।। १४ ।। दोहा ।। जीवत सुरव बहु बिधि
लहै अंत मिलै अपबर्ग ।। काल सुरेश सहेपू बिधि निज

हित गवने स्वर्गा ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ तब कर जोरि विष्णु र
सन रोवा ॥ खेल हमार सकल दिव खोवा ॥ हरि पूछा
यम सन मुसकाई ॥ किमि यम लोक तुम्हेहु अकुलाई
॥ तब यम कहेउ मोर नहिँ काजा ॥ दंड फाँस लीन्ह म
हराजा ॥ सुरपा जोरे कर ठाढ़ा ॥ तब हरि कहेउ तु
महिँ कस गाढ़ा ॥ इन्द्र कहा सम सब निवास ॥ चाहत
मर्त्यु लोक कर बास ॥ पिव सन पूछा हरि हरषाई ॥
तुम कस रुदन करो सिर नाई ॥ कहा प्रभु गिरिजा अ
कुलाहीँ ॥ कापाली रटन रटत दिन जाही ॥ तब हरि कहेउ
ब्रह्म कहु हेनू ॥ तुम कस चढ़ेउ दुख के सेनू ॥ १६ ॥
॥ दोहा ॥ ब्रह्महि कहा जोरि कर लिखन झूठ भा मोर
॥ विष्णु उन्हे भरमावहु जौं छल लागै तोर ॥ १७ ॥
तबहि विष्णु अस हृदय विचारा ॥ केहि विधि अबछ
ल लगै हमारा ॥ तब इक युक्ति हृदय महँ आई ॥ अष्ट
अंग रवि तिलक बनाई ॥ उर तुलसी कर माल अनूपा ॥
भवन भुजन सोभित सुर भूपा ॥ तुलसी मै सब अंग ब
नाये ॥ अलपी टोपी रुचिर सोहाये ॥ विधि पिव काल
इन्द्र मै बेला ॥ प्रविसि नगर कीन्हेउ छल खेला ॥ चेले
घर घर करहिँ पुकारा ॥ भजहु विष्णु किमि भुलेहु गं
वारा ॥ विष्णु भक्ति कर फल नत काला ॥ होनहि पि
ण्ड लहै नर बाला ॥ तब सब कहैं विष्णु को आही ॥
जासु भक्ति तुम कहेउ सराही ॥ पिण्ड कहै यह सब
हम जानी ॥ विष्णु अहै जीवन सुख दानी ॥ जो तुम
चलहु सन्त के पासा ॥ तो अबही पुजवहि सब आसा
॥ उन कर दरपा करै जो कोई ॥ महा ज्ञान अनुभव ने
हिं होई ॥ महन पुरुष को करै बयाना ॥ तुमहिँ देख

हम परिवनाना ।। रिद्धि सिद्धिकहँ देवन प्रेरा ।। सोच
रिज किमि कहौं घनेरा ।। तब सब के मन भा विश्वा-
सा ।। तुरतहि चले महंत के पासा ।। जाय सिद्ध कर
परसे पाई ।। अति सुख भयेउ न हृदय समाई ।।
विलुहि देखि सकल नर मोहे ।। नहिं सुधि तन मन
जन वस कोहे ।।१८।। दोहा ।। विप्रु जनन को सिर
परसि बहु बिधि दीन्ह असीस ।। करहु भक्ति भग-
वान की पावहु पद अज ईस ।। नवधा प्रेम को लक्ष-
ना परा भक्ति समुझाय ।। लगे ज्ञान बरनन करै सो
सुख बरनि न जाय ।। २० ।। चौपाई ।। गुन प्रकीर्त
अरु तत्व विचारा ।। जीव ब्रह्म माया विस्तारा ।।
प्रथम तीनि बपु सब देखावा ।। इन्द्री दोष अनेक
बनावा ।। बहुरि कहेउ इन्द्रिन कर देवा ।। षट च-
क्रन कर बरनेउ भेवा ।। चौदह भुवन आँग प्रतिब-
रणा ।। जीवन कहँ सुख हरि की शरणा ।। चारि अ-
वस्था कियन समेता ।। कहेउ ब्रह्म पर ज्ञाई जेता ।।
जेहि विधि सो जस भयो पसारा ।। सो सब कहेउ वि-
प्रेय विचारा ।। सांख्य वेदान्त सकल मत भाखा ।।
बहुरि वेद कर बरनेउ शाखा ।। कहेउ कहन इतिहास
अनेका ।। हेय अधीत नव उत पद टेका ।। २१ ।।
।। दोहा ।। भयेउ कुमारख नाथ मैं सुनि तुव ज्ञान
विवेक ।। अब दीजै छापा तिलक मोहिं शरण तुव
एक ।। २२ ।। चौपाई ।। यह चरित्र नव नृप सुनि पा-
वा ।। चिन्ता भयेउ क्रोध मन छावा ।। भै अज्ञा वि-
लम्ब जनि लावहु ।। मेरे पास उन्हे लै आवहु ।।
सुनि रजाय दस पाँचक धाये ।। हरि कहँ धरि नृप

लगा ले आये ॥ देखि तेज नृप तजि अर्द्धासन ॥ बैठे विष्णु पाइ अनुसासन ॥ तब दिव कहेउ तुम जगत उधारन ॥ पावँड़ वेष धरेहु केहि कारन ॥ विष्णु कहा अब सुनिय नृपाला ॥ जब चै अंग प्रगट किय बाला ॥ तब तीनिहुँ कहँ आज्ञा दीना ॥ उनपति पालन नाथ प्रवीना ॥ जेहि जस हुकुम दीन पितु माना ॥ सो तस करै नदूसर बाना ॥ पुन्य पाप जीवन सिर नाई ॥ स्वर्ग नर्क सब भोग कराई ॥ अब तुव राज काज मम छूछा ॥ पुन्य पाप बिनु हमहि को पूछा ॥ पितहि छड़ाइ दीन्ह तुम कासी ॥ तेहि ते दरपनि रहैं उदासी ॥ तब नृप बचन कहेउ करि कोधा ॥ हौ तुमछलीतुमहिंहमसोधा ॥ जो बन कहँ सत मार्ग बनावहु ॥ नामहु कोटिन पाप लगावहु ॥ अपुना हरदम रमा निवासी ॥ पुरुष नारि हित विरचेउ कासी ॥ ब्रह्म करहिं शारद कहँ सेवा ॥ ज्ञान भक्ति कर जानु न भेवा ॥ योग ज्ञान मह लरखेउ नपारा ॥ तब तुम कीन्ह रटही मत सारा ॥ २३ ॥ दोहा ॥ ॥ सो तुमार छल हम लखवा अपर नजानै कोय ॥ पुन्य पाप धरि जीव सिर जनन मरन जेहि होय ॥ २४ ॥ ॥ चौपाई ॥ तब हरि नृपहि भेद समुझावा ॥ अगला दोष दुरावबनावा ॥ जब अइहै अधर्म कलि काला ॥ रहहि न कोउ श्रुति मत नरपाला ॥ सत्य रहित सत विद्या हीना ॥ खल व्यभिचारी धूर्त मलीना ॥ तब अधर्म होइहै क्षिति माहीं ॥ मातु पिता कोउ मानहिंना हीं ॥ कोउ कोउ सुजन भक्ति मम करिहै ॥ तेहि पाछे सब कुल उद्धरि है ॥ तुम समान को अस नृप जाये ॥ प्रजा लागि तपि देह जराये ॥ जो नृप होइ प्रजा प्रतिपालक

॥ पोषन करै जानि जन बालक ॥ ताकहँ देउँ भक्ति मैं हारी॥ चारो मुक्ति जासुपनि हारी ॥ किंचित होइ ज्ञान गुन सागर ॥ तेज पुंज बल बुद्धि उजागर॥ जो नेहि राज्य प्रजा दुख पावै ॥ सोशठ नृप यमलोक सिधावै ॥ मन क्रम बचन प्रजा प्रति पालै ॥ सो नृप सुयपा धर्म के आलै॥ तासु तेज लखि तुमडर राखै॥ सुनहु नृपनिहस झूठ न भाखै॥ नरक उदिष्ट नृपन के भेदा॥ सुनहु सत्य जस भाखेउ वेदा॥ नर्क स्वर्ग जेहि विधि नृप पावै ॥ सो सब ब्योरा तुमहि बतावै ॥ घनाक्षरी। साधुन पै माथै प्रीति सोहदन सो राखै तासु विषै रस सोई चाखै। संग बिस्वही विहारहै ॥ प्रजा नाहिं पालै नित्य सुख मैं विहालै देह आपनी को लालै झूठ बोलै बार बार है॥ नारी हित मानै नाहि खोज नित्य आनै नित्य पाप मैं भुलानै सोई नर्क को विहार है ॥ नेमि नहीं जानै चलै उलटी रीति चालै माहि जानी नरपालै यम आलै जनहार है ॥ २५॥ साधु द्विज नोखे प्रजा प्राण सम पोखै पाप की न्हे पर रोखै जानि धर्म एक प्यार है ॥ दया के बल लेखै न्याव डीलन पेरखै काम काजी नरेखै आपु देखै बार बार है॥ कोबिद कबि भाखै तासु संग्रह नित राखै मान दाकर को लाखै प्रजा पोषन बिचार है ॥ संग साधु अभिलाखै तासु बानी रस चाखै विष्नु अस भाखै नृप राम अवतार है ॥ २६ ॥ दोहा ॥ नव राजा यह ससुझि कै भयेउ सत्य महँ लीन ॥ जेहि देवन जस रुचि बनी सो नस मारग कीन ॥ २७॥ छन्द ॥ नस कीन मारग देव खल करि अमित राह बनावहीं ॥ धीर संत बेष अशेष रक्षनि सें गटहिन दोष लगावहीं ॥ पितु मातु सुनत्रिय

त्यागि हरि जन होहु धर्म सुधारहू ॥ लखि मोह माया ।
झूठ जग में सार शब्द विचारहू ॥ २८॥ दोहा ॥ जबनि
न दीन्हो त्यागिगरह कीन जाय हरि ध्यान ॥ तब लागी
माया छलन बढ़ै दंभ अभिमान ॥ २९॥ इति श्री संहि-
मल श्री महाराजाधिराज श्री रामचंद्र कृपापात्राधिकारी
अमरसिंह सुत साहेब दीन तस्य नारि विरचिनायो सती
विलासे पद्म पुराणा सते विष्णु दिव संवादे गृही दोष
वर्णनो नाम षष्टमो विलासः ॥६॥ दोहा ॥ बाठ भय्य
बन सों रहे यकटक ध्यान लगाय ॥ तदपि रहिन को
नहिं लुलै अनिथ बिसुरव नहिं जाय ॥ १॥ चौपाई ॥
जदुरावास यह बचन सुनावा ॥ भयो बोध द्विज गृह
कहँ आवा ॥ फिर मैं बिहँसि कन्त सन पूछा ॥ त्रिय त-
जि तप कोहि कर भै छूछा ॥ तब पिय कहेउ भारथइति-
हासा ॥ मैं एक तरुहह तजि तपु आसा ॥ रसा प्रद-
क्षिन करन सो लागा ॥ तासु नारि नेहि पद अनुरागा
॥ त्रिय धर्मी चञ्चल इन्द्र जब जाना ॥ तब अपने मन
कीन गुमाना ॥ तिनजुग काम बसन्न हि लीन्हे ॥ अ-
पुना मनुज रूप सुचि कीन्हे ॥ तिनगवनी तब तिय के
पासा ॥ कोटिन्न भांति कि हेसि विश्वासा ॥ तब त्रिय
स्वागत तेहि कर कीन्हा ॥ अपुना जल नहान हित ली-
न्हा ॥ दूती कहेउ बिनय बहुलाई ॥ चलहु नो सागर
चली अन्हाई ॥ निकटहि अहै दूर कछु नाहीं ॥ अहै
विमल जल तेहि के माहीं ॥ यह सुनि गइ तिय सागर
तीरा ॥ तहाँ बसै सुख त्रिविधि समीरा ॥ तब फिरि न
जर गई चहुं पासा ॥ सोभित अमित बसन्त निवासा
॥ २॥ छप्पै ॥ लता ललित तन फलित विमल तन तरुवर

फूले ॥ सर सरिनन में कमल फूलि योगिन मन भूले ॥ भ्रमर पुंज गुंजार कोकिला प्राब्द कुहूके ॥ नर नारी जो बिलगाद्दू के हिय करत दुहू कै ॥ पिक चकोर अरु मोर गान करत गान आनन्द मन्न ॥ यह देखि मर्म भामिनि रहेउ जदपि लहेउ पति तन धन्न ॥ धवरहं करै उठे किं सुप्या देदूल सज्जे ॥ कोकिल प्राब्द चकोव पिक मारू अनि बज्जे ॥ खंचर बंचर सैन सकल चतुरंगिनि सोहै ॥ जो बियोग नर नारि ताहि को हृदय बिसोहै ॥ मीन केतु के पंच सर सोप्र नष्ट देखे परै ॥ जाहि निरखि योगीन के बिनु पावक दावक जरै ॥ ३ ॥ दोहा ॥ जेतना रचना लखत नियाते तना जानु बिचित्र ॥ तब निज हृदय गुमान करु अस नहिं देखेउ नित्र ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ सोभा अमित न बरन सिराई ॥ सो अनन्द नित हिय अधिकाई ॥ हिय महं काम अधिक नहि जागे ॥ पुरुष सुघर देखेउ तब आगे ॥ तब निज पति पद कीन्हेसि ध्याना ॥ हृदय बिचारि मर्म सब जाना ॥ दूनी सत्त अ स कहा बिचारी ॥ मैं पापिनि है काम किन्नारी ॥ ५ ॥ दोहा ॥ जारेउ कामहिं प्रभुजब दीन्हेउ मूल बचाय ॥ मैं जब देहों आप यहि सोऊ नापूा होदूजाय ॥ ६ ॥ इन्द्रहि कहेउ पुकारि कै मैं अब मूढ़ बचाव ॥ देत अहों मैं आप अब कि मौ छांड़ि यहठाव ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ कवि की आप बचा नुव पाना ॥ नहिं मैं नोहिं अब भा अभिमाना ॥ सुनत इन्द्र तजि ठाव पराने ॥ सिश्चौ मरन आपनो जाने ॥ सीतल हृदय न रति दरप्रानी ॥ तब चिय गई सदन अकुलानी ॥ ताके पतिहि भई नभ बानी ॥ है मैं मूढ़ महा अपखानी ॥ मैं शठ गटह तजि नपु जेन कीन्हा ॥ सोसब भयो

पाप कर चीन्हा ।। यह सुनि सो मै कंपित गाता ।। अब नि-
स्तार करहु मम नाना ।। सुनि आरत मै गिरा सभीरा ।। से-
वहु जाय नारि मति धीरा ।। त्रिय पुन पिंड पितर कहँ देहू
।। रहै सिद्ध मन हिय धरि लेहू ।। यह सुनि सो नप गजिर-
ह आवा ।। बोलि बिप्र हबि दान करावा ।। हरि तब आय
पिंड कर लीन्हा ।। आशिरबाद दंपतिहि दीन्हा ।। फिर मै
बिनय कन्त सन लावा ।। द्विजहि नारि नहिं किमि समु-
झावा ।। ज्ञान भक्ति रूप किमि कम कीन्हे ।। प्रजहि सि-
खावन यह बिधि दीन्हे ।। नप मह भयो कवन अघ भारी ।।
जेहि ते प्रभु तेहि करु गृह चारी ।। सकल भेद मोहि देहु
बनाई ।। तुम्हरी कृपा ज्ञान फल पाई ।। तब पिय बोलेउ र
हृदय बिचारी ।। आठ दोष हैं त्रिय कह भारी ।। सुनै आन
पुरुष मन माही ।। आन पुरुष की बचन सोहाही ।। कहै
आन पुरुष की बाना ।। चितवै आन पुरुष मन राना ।।
पर पुरुष सन बात कहानी ।। किंचित होय ए कन्त अ-
ज्ञानी ।। जतन करै पर पुरुष लागी ।। यक दृढ संग्रह करु
अनुरागी ।। ८ ।। दोहा ।। दोष जो आठ प्रकार के प्रिया अ-
है त्रिय माहिं ।। इन ते होइ बिरक्त जो पति बरना कहिना-
हि ।। ९ ।। चौपाई ।। ब्रह्म चर्य्य अरु पति ब्रत केरा ।।
एक धर्म प्रिय नहिं कछु फेरा ।। कम नेम शुद्ध होहि ब्रह्म
चारी ।। नारि शुद्ध पति बर्न बिचारी ।। यह ते द्विजहि न
त्रिय समुझावा ।। करि सुमान तेहि पास पठावा ।। सज-
हि मन महँ कीन्ह गुनाना ।। प्रजा हमारि सहे दुख नाना ।।
मुक्ति हेन बहु जतन कराही ।। है माया छल तेहि के मा-
ही ।। तप जप योग जतन जत करही ।। तेहि छल माया अ-
घ सिर धरही ।। १० ।। दोहा ।। चौबिस दोष अपार जो ज्ञान

भक्ति महँ सोय ॥ योगी यती तपी लहै यही न पावै कोय ॥
॥११॥ चौपाई ॥ मानस पाप यहि न कहँ नाही ॥ नहिँ
माया कुल नहि के माही ॥ जबहि जीव धर्महि मन लावै
इन्द्रीदेव सो तुरित नसावै ॥ अहंकार मन बुधि चित जोई
॥ हरषाणि ब्रह्म विष्णु पति सोई ॥ अंतसवारन करहिं २
उतपाना ॥ नेहि नें बिगरु सकल धर्म बाता ॥ १२ ॥
॥ दोहा ॥ दयावन्त जो यहि जग नेहि समान नहि को
य ॥ कोटिन अश्वमेध फल अतिथ जेंवाये होय ॥
॥३॥ चौपाई ॥ बरु अकाश तारा गनि जाई ॥ अतिथ
पुन्य नहिँ बरनि सिराई ॥ पावस रितु झरि बुन्द अ-
पारा ॥ सिकता तृन गनि पुहिमि बिचारा ॥ यह सब ले-
खाबरु बुध करहीं ॥ अतिथ पुन्य समुह चित धरहीं ॥
मीठा बोल जूड़ जल भोजन ॥ पूजहिं अतिथ धन्य पु-
हुमी जन ॥ औरहु प्रिया गुनेउ रूप बाता ॥ सेवै विष्णु २
जानि पितु माता ॥ पितु अस्नान करावै जोई ॥ कोटिन-
हरिहर कर फल सोई ॥ पितु अज्ञा सिर धरै कुमारा ॥
सत्य लोक महँ करै बिहारा ॥ मृतक पिंड फल वेद २
बखानै ॥ जीवत को कछु मर्म न जानै ॥ १५ ॥ दोहा
॥ जीवत पर जड़ता भई सो प्रिय कही न जाय ॥
पत्थल हित जल कोस शत पितहि देत अलसाय ॥
॥१५॥ और भक्ति माया छलै ज्ञान जतन लै खाय ॥
पिता भक्ति जो करत है ना महँ कुल न समाय ॥ १६ ॥
मनसा बाचा कर्मना सत्यहि करै सँभार ॥ चारि भाँति
को मुक्ति नित तासु करै दरबार ॥ १७ ॥ चौपाई ॥
मिथ्या बचन एक जो भाखै ॥ सो अघ कोटि योग अ-
तनासै ॥ सत्य कहै जो पापिउ होई ॥ अंतकाल बसि २

हरिपुर सोई ।। नारि पतिब्रत गृह महँ त्यागी ।। भयो मन्द मति जड़ अनुरागी ।। तासु त्रियाजब गृह दुख पावा ।। तब अकरूर यह बचन सुनावा ।। जो सठ नारि त्यागि गृह जाहीं ।। सो सजाय लहु यमपुर माहीं ।। त्रिय सेवा लै साधन जप करहीं ।। सो सब सिद्ध विष्नु उर धरहीं ।। तीर्थ बर्त अरु पिंड बिधाना ।। यज्ञादिक जो है बिधि नाना ।। बिनु त्रिय सबकी सिद्ध नहिं होई ।। जैसे महा ऊसर बिय बोई ।। दुबिधा नारि ताहि संग लीन्हे ।। धर्म त्रिया कर त्यागन कीन्हे ।। मातु पिता घर में दुख पावै ।। अपुना सठ परथल नहवावै ।। पूरण ब्रह्म सरबत्र समाना ।। तोहि कहँ जल पषान मृद जाना ।। यह ते निंदासूचित होई ।। चेतन कह जड़ भाषै जोई ।। आतम ब्रह्म सकल घट बोलै ।। पियन खान अरु करन किलोलै ।। जीवन जड़ना बहु बिधि लागी ।। गंग नीर खनु कूप अभागी ।। १८ ।। दोहा ।। बरनाश्रम गृह त्यागि कै पाषंड बेष बनाय ।। माँगि माँगि भोजन करै यह सुख बरनि न जाय ।। १९ ।। ब्रह्म ज्ञान दाया बिना रहित शान्त संतोष ।। अपुना तर्कहि जान है गृहिन देखावहिं दोष ।। ।।२०।। चौपाई ।। मातहि मात कहन दुख पावहिं ।। घर घर मातु मातु गोहरावहिं ।। भोजन मातु केर घर त्यागे ।। घर घर टुकरा माँगु अभागे ।। मगन होहि परनारि बिलोकी ।। सो सठ बसु यम लोक ससोकी ।। मन करि दृष्टि कुदृष्टि निहारे ।। तीर्थ बर्त सब छरा मँझारे ।। बिनु उद्यम जो पर धन खाहीं ।। तासु पाप लै यम पुर जाहीं ।। जोकल शूद्र गृह दुख पाये ।। कछु दिन राये ज्ञान नहि भाये ।। सो कल्पित मति कथा बनाई ।। घर घर

सो बैराग सुनाई ॥ अपुना उन्हे ज्ञानउपदेशै ॥ तेहि धन हरन हेत सिष पेषै ॥ करि छल कछु धन पावहि। जबहीं ॥ और द्वार फिर देखहि तबहीं ॥ निपुि दिन रहै लोभ मति मानी ॥ जिमि दावा मधु लाइ किरानी ॥ मन बच कर्म त्याग जो होई ॥ सुनु प्रिय सन्त सिरोमनि सोई ॥ हीरे ते अधिक वेद जेहि गावै ॥ तासु रहनि अब तोहि बतावै ॥ २१ ॥ दोहा ॥ मन बुधि चित हरि चरण मे अपर न जानैं बात ॥ अच्युत गोत्र कोपीन कटि नहीं जगत सो तात ॥ २२ ॥ चौपाई ॥ विषय कथा कर त्यागन करई ॥ सदा वेदान्त वाक्य मोर मई ॥ क्षुधा मात्र भिक्षा करि लेवै ॥ होइ अपेाक करुणा जन पोषै ॥ वृक्ष मूल के आश्रित रहई ॥ दोउ कर पाच सकल सुख लहई ॥ कंथा बसन कुच्छ करि राखै ॥ तेहि दुस्त्री गुनि हरिरस चाखै ॥ निज आनन्द भावै मन लेवै ॥ इन्द्री प्राण्त वृत्ति तनु पोषै ॥ अह निपुि स्वस्वरूप रमि रहई ॥ देह भाव सब त्यागन करई ॥ आतम मे सब जगत विलोकै ॥ बैर प्रीति आनंद न सोकै ॥ अस कोपीन वन्त जो होई ॥ तेहि दरपान रघु रहै न कोई ॥ चिन्तन वस्तु पास जो राखै ॥ तो कोपीन जनि मन अभिलाषै ॥ तृस्ना त्री कोपीन एक साथा ॥ सोदीन्हे पग यमपुर पाथा ॥ इन्द्री युत समयोग न दूजा ॥ हरि सुमिरन सम और न पूजा ॥ जो निरबैर रहै सो ज्ञानी ॥ पनि सेवै सो विषयसयानी ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ मातु पिता के चरण रत दाया सत्य सम्हार ॥ सो गिरस्त सुख सुख पुञ मे संग बसत भव पार ॥ २४ ॥ सोरठा ॥ बिना पदारथ पाइ कोटि जन्म करि पचि मरै ॥ भवजल पार न जाय

आत्म ज्ञान नौका बिना ॥२५॥ चौपाई ॥ साठि सहस्र बर्ष अवराधे ॥ जो फल लहै न हरि ब्रत साधे ॥ सोइ फल विष्णु भक्ति तत काला ॥ देत नमत पद परम कृपाला ॥ यह सब कथा कन्त समुझाई ॥ सो भाषा मैं ग्रन्थ बनाई ॥ कलि महँ पुर्ष बिषय रस माते ॥ निशि दिन करहिँ पाप की बाते ॥ अपुना करहि न हरि कै सेवा ॥ नारि न जानै पतिब्रत भेवा ॥ नेहि नेऊ बसहिँ यमलोका ॥ समुझि दसादाप भइ सोका ॥ २६ ॥ दोहा ॥ सती शंभु हरि कृपा नें बिरचेउ धर्म अगाधु ॥ नारि लहहिँ पतिब्रत पद नर होइहैँ सुचि साधु ॥ २७ ॥ अक्षर प्रति यह रबि किरिन सुर बुध साधु अनन्द ॥ निश्वर किमि सुनि सुखलै जो बिषयी मतिमन्द ॥ २८ ॥ चौपाई ॥ यदपि कथा अघ ओघ नसावनि ॥ बिषयिन लागिहि नधी भयावनि ॥ पावस झरि सरिव सब सुख पावै ॥ आक जवास नदपि डहि जावै ॥ प्रगद चन्द सब कहँ सुख कारी नदपि चोर सरिव होहिँ दुखारी ॥ सबहि ब्रह्म द्रव सलिल सोहावन ॥ सुर नर अहि सज्जन मन भावन ॥ नदपि प्रेत कहँ दुरगम भारी ॥ बाज भूमि जल होहिँ सुखारी ॥ जैसे यह सन सुरसरि रीती ॥ दुष्ट प्रेत नर करहिँ न प्रीती ॥ २९ ॥ दोहा ॥ कौने मिसु जोगाहि कहँ सुनि मन गुनहि बिचारि ॥ पाइ शुद्ध मन विमल होइ अन्त तरहिँ भव बारि ॥ ३० ॥ जो कोइ जानै मनुज कृत नो मति मन्द अयान ॥ सुनि प्रतीत भाषा इहैँ जो लिखि अहै पुरान ॥ ३१ ॥ चौपाई ॥ यह के गुन सुने कहे बेना ॥ नेहि प्रसन्न होइ राजिवनैना ॥

सती प्रसाद स्वसति परगासा ।। पति आज्ञा हिय भ-
येउ हुलासा ।। भव सागर लखि दुराम भारी ।।
कैहि बिधि उतरु नारि यहि बारी ।। ज्ञान बिचारि
बिवेक जहाजा ।। तापर पुरुष चढ़हिं करि साजा ।।
घट जल जन्तु निगलि नेहि जाहीं ।। जिन्के राम
प्रेम बल नाहीं ।। कोउ कोउ नाम नाव गये पारा ।।
नासु प्रभाव बिदित संसारा ।। नापर भक्ति सेतु रचि
सन्ता ।। जीव अमिन करु पार तुरन्ता ।। सोई सेतु
मोरे मन मान्ता ।। सन्त नारि हित रचेउ बिधाना ।।
नारि कुलीन गृही तरि जाहीं ।। चढ़त याहि फुल से-
पूरा नाहीं ।। जो गृहस्त यह तत्व बिचारहिं ।। आपु
तरहिं औरो कुल तारहिं ।। ३२ ।। दोहा ।। बरनन
को गुरु बिप्र है नारिन को गुरु कन्त ।। गुरु बिर-
क्त बेदान्त है गिरिहिनि को गुरु सन्त ।। ३३ ।। चौपाई
।। मृतक संग त्रिय नियम निबाहा ।। जरी संग न-
हिं सुत बित चाहा ।। तस मति जो सब दिवस लगा-
वै ।। सो सायुज्य मुक्ति फल पावै ।। माया कृत अज्ञा-
न अनेका ।। जीवन सत्य धर्म नेहि टेका ।। कोउ नहि
मरिके कहेउ सँदेशा ।। मृतक मुक्ति कर इहै अंदेशा ।
जीवन ही होवै दुख दूरी ।। मेरी जानि मुक्ति
सोइ पूरी ।। काम क्रोध मद मत्सर मोहा ।। लोभ
द्रोह आसा दुख सोहा ।। इन्हहि आदि तजि भ-
यो अनन्दा ।। मुक्ति इहै छूटो भव फन्दा ।। जो
कछु लिखा टरत नहिं जोग ।। जहाँ रहैं तहँ भुग-
तै लोग ।। मातु पिता सुत हित सब सारो ।। काल ग-
है नहिं कोउ रखवारो ।। भीख चाकरी ब्योहर नाना

धरना बिना मिलहि नहिँ दाना ॥ दियो होइ सो अपुने आवै ॥ काहिको चिन्ता करि धावै ॥ तिपिर दिन जीव जाहि यम धारा ॥ सब है नहँ के जावन हारा। धरना भर सब कोइ सुख जीवै ॥ मृतक हो इतब काहेको रोवै ॥ संगी अचल अपन सत धर्मा नेहि जानहिं नहिं मन्द बेसर्मा ॥ ३४॥ दोहा ॥ सहगामिनि और सूर छत्र जरत चिता रण आमि-

सती साधु ये रैन दिन जरत सत्य धर्म लागि ॥

साढ़े तीनि कोटि दोउ करु सनि लोक निवास ॥

एतेउ करि परिवार युत पूंभु कल्प भरि बास ॥

सती बिलास सो सत्य धर्म पढ़ै सुनै मन लाय॥

आदि ज्योनि रक्षा करै कोटि कष्ट मिट जाय ॥

अमावस और पूरोमासा तुलसी लग करि प्रीनि ॥

बर्ष प्रजन्त यहि कह सुनै छूटि जाय सब भीनि ॥

मन बाँछित जो चाहु चिय तौ यह सुन कर नेम ॥

चारि पदारथ कर बसै दिन प्रति पावै छेम ॥ कबि जन बुध जन सन्त जन तेहि बन्दो धरि पाव ॥ जो यह भाषित होइ फुर तौ सत सभा सुनाव ॥३५॥ छन्द॥

सुनाव यहि मनि साधु चिय कह होय पिय मन भावनी ॥ यह पुरान बेद पुरान के मत सुनहिँ गे चिय पावनी ॥ जो क्रूर अबला कुटिल मनि तेहि लागु कथा भयावनी ॥ करि कबहुँ मनि यह गनि चलि हसो करिहँ सत पुर छावनी ॥ ३६॥दोहा ॥ सहगामिनि संग पीनि करि मृतक सो गति लेहि ॥ सती न क्यों गनि पावहीं जो पनि भजै सदेहि ॥ ३७॥ छंद

सदेह पिय पद सुरनि लावै अमित सुख भोगै नही॥

तेहि सुयपूा हरि हर ब्रह्म गावैं भागवंती सो सही ॥ लोभ मोह न मान मद तेहि जिन पदारथ यह गही सहज भाव सो सील नै युत परम पद सो चिय लही ॥ ३८ ॥ सोरठा ॥ करै कर्म सम प्रीति योग भोग कीडगर यह ॥ तेहि न भजै अनरीति अति अधर्म को कवि कहै ॥ ३९ ॥ सवैया ॥ भागि जगी जब पूर्व जकी तब सौ पति मोहिं दया करि हेरी ॥ भोरहि मों समुझाइ दियो तब ज्ञान भये पति के ब्रत केरी ॥ जानि परो पति पूजन के फल छूटि गये सब तर्क घनेरी ॥ वेद मते सोइ नारि बड़ी जिनके गति है पति के ब्रत केरी ॥ ४० ॥ छप्पै ॥ पति पद जेहि रति होय ताहि यम देखत कंपै ॥ सुरपति रहै सकात तेज रवि प्रापि दुरित झंपै ॥ हरि हर बिधि निज नियन नासु कीर्ति सुनावैं ॥ तेहि दरशान हित हेत तहाँ नितप्रति चलि आवैं ॥ सकल तीर्थ इच्छा करैं यह डारै मम उदर पग ॥ नारि बिरंजी श्रुति कहै सुद्ध होत नेहि गमन मग ॥ धन्य तात वै मातु धन्य जाको चिय ब्याही ॥ धन्य स्वसुर अरु सास धन्य कुल बिमल सराही ॥ धन्य नगर गृह गाँव धन्य जो बसत परोसी ॥ धन्य दहलुई तासु सदा निज कर जिन पोसी ॥ इमि धन्य सब जगत मे तासु पाप नहि यम सुनै ॥ नारि बिरंजी बचन ध्रुव धर्म अमित मन मैं गुनै ॥ नरवर जप तप करहिं नियम ब्रत संयम साधहिं ॥ जज्ञन योग बिज्ञान सोहि माया तेहि बाधहिं जबहिं नारि हरि भक्ति नहि को धारन करिये ॥ बिन प्रयास निस्तार हवि भव सागर तरिये ॥ तब जहँ तेहि

माया छलै अचल पनि ब्रत भक्ति है ॥ वह आनन्द ।
तेहि जगत में कर जोरे तेहि मुक्ति है ॥ दुर्गवंश ।
वंश मोहिं पिय भक्ति बनायो ॥ मन क्षमा उपजो ।
ज्ञान कन्त सेवा मन लायो ॥ अनुभव आनन्द जगो
सती सत ध्रुव यह भाषी ॥ दिन प्रति करु कल्यान स-
त्य गोरी पिन साषी ॥ षोडश वर्ष कि उमरि मैं किमि ।
भाषी मैं धर्म पिय ॥ यहि ते सब नर जानिये यह की-
न्ही कन्त प्रभु तिय ॥४१॥ इति श्री महाराजाधिराज ।
श्रीमद्दिमल श्री रामचन्द्र कृपा पात्राधिकारी अमर-
सिंह सुत साहेबदीन तस्य नारि विरचितायां सती
विलासे नाना पुराण मते सप्तमो विलासः ॥ ७ ॥

इति सती विलास समाप्तः

इति

नामकिताब	नामकिताब	नाम किताब
कृष्णप्रिया	भरतरीगीत	कृष्णबाललीला
छन्दोर्णवपिंगल	दानलीला नागलीला	कायस्थदर्पण
कविकुलकल्पतरु	दोहावली रत्नावली	देवीभागवत
रसराज	गोकर्णमहात्म	ज्ञानचालीसी
सत्सई सटीक	हनूमान बाहुक	मनमौजचरित्र
सभाविलास	जनक पच्चीसी	सौदागरलीला
तुलसी शब्दार्थप्रका	बनयात्रा	विनयप्रकाश
प्रेमरत्न	कल्पसूत्र	वैद्यक वैद्यान्न आदि
युगलविलास	समरविहारविंद्रावन	योगवाशिष्ठ
चित्रचन्द्रिका	विहारबिंद्रावन	प्रबोधचन्द्रोदयनाटक
बारहमासाबल्देवप्र-	अनेकार्थकोष	सारव्यतत्त्वकौमुदी
साद	स्त्रीदर्पण	रामाभिषेकनाटक
जगद्विनोद	शृङ्गारप्रकाश	कैवल्यकल्पद्रुम
रागप्रकाश	शंकरदिग्विजयभाषा	आनन्दाऽमृतवर्षिणी
स्तावनीवशैरवनारसी	ब्रह्मसार	निघण्टभाषा
शृङ्गारबत्तीसी	परमार्थसार	अमरविनोद
शिवसिंहसरोज	बारहमासाफ़कीरअ-	वैद्यजीवन
नानार्थनौसंग्रहावली	लाबरदा	औषधसंग्रहकल्पवल्ली
शनिश्चरकीकथा	सुन्दरीचरित्र	अमृतसागर
ज्ञानमाला	रामकलेवा	अमृतसागरबड़ी
गोपीचंदभरतरी	गंगालहरी	वैद्यमनोत्सव
कथाश्रीगंगाजी	कथाचित्रगुप्त	ज्योतिष॥
अवधयात्रा	भजनावली	जातकचन्द्रिका॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
जातकालंकार	हारीतस्मृति	जातकालङ्कार
दैवज्ञाभरण	याज्ञवल्क्यस्मृति	षट्पञ्चाशिका
ज्ञानस्वरोदय	व्रतार्क	मुहूर्त्तगणपति
रमलसार	निर्णयसिन्धु	मुहूर्त्तचिन्तामणि सटीक
दुन्द्रजाल	लघुकौमुदी	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड सटीक
सामुद्रिक	सिद्धान्तचन्द्रिका	मुहूर्त्तदीपक
मुहूर्त्तचक्रदीपिका	अमरकोष प्रथमकांड	होरामकरन्द
संस्कृतपुराणस्मृति	अमरकोषभा॰टी॰स॰	शीघ्रबोधसटीक
व्याकरणादित्यादि	सन्ध्योपासन	मुतफ़र्रक़ात
श्रीमद्भागवत पुराण	संग्रहशिरोमणि	विश्वविनय
मार्कण्डेयपुराण	शिवार्च्चन	अक्षरावली
भविष्योत्तरपुराणयम	कायस्थकुलभास्कर	स्वयम्बोध
द्वितिया	कायस्थधर्मनिरूपण	ज्ञानचालीसी
श्रीसत्यनारायणकथा	मथुरासभा	बालाबोध
भगवद्गीता	तुलसीतत्त्वभास्कर	विद्यार्थी की प्रथमपु-
श्रीभगवतीगीता	श्रीगोपालसहस्रनाम	स्तक
भगवद्गीताविष्णुसह-	शार्ङ्गधरसटीक	गणितकामधेनु
स्रनामसहित	गीतगोविन्दभा॰टि॰स॰	लीलावती भाषा
दुर्गापाठसटीक	ज्योतिष	पटवारियों की पुस्तक-
दुर्गापाठस्तोत्र	जातकाभरण	चारभाग
महिम्नस्तोत्र	पाराशरी सटीक	पद्मावत
अपराधभञ्जनस्तोत्र	चन्द्रज्ञातक सटीक	दूति
मनुस्मृति उर्दूटीका स-	लघुजातक	



